संस्कृत साधना भाग-7

प्रथमः पाठः **वन्दना**

हिंदी अनुवाद

अखण्डमण्डलाकारं ..... नमः॥

अनुवाद—उस अखंडमंडलाकार (ईश्वर/गुरु) को जो इस चर-अचर संपूर्ण जगत में व्याप्त है और जिसने यह रास्ता दिखाया है। उन गुरु को नमस्कार है।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ..... नमः॥

अनुवाद—जिन्होंने अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान रूपी अञ्जन शलाका (कलाई) से दूर कर हमारी आँखों को खोला है, उन गुरु को अर्थात् ईश्वर को नमस्कार है।

मूकं ..... परमानन्दसागरम्॥

अनुवाद—जिनकी कृपा से गूंगा बोलता है, लंगड़ा पर्वत को लाँघ जाता है, उन परमानंद के सागर को नमस्कार है।

नमामि ..... तथा॥

अनुवाद—सुबह उठकर (प्रातःकाल) ईश्वर को नमस्कार करता हूँ, पिता को नमस्कार करता हूँ, पूज्या माता को नमस्कार करता हूँ और शिक्षकों को नमस्कार करता हूँ।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) ईश्वरेण अखण्डमण्डलाकारं चराचरं च व्याप्तम्।

(ख) गुरुणा चक्षु उन्मीलितम्।

(ग) ईश्वर कृपया मूकः वाचालः भवति।

(घ) ईश्वरः, जनकः, जननी, शिक्षकाः च नमनयोग्याः सन्ति।

2. रिक्त स्थान भरिए-

(क) **अखण्डमण्डलाकारं** व्याप्तं येन चराचरम्। तत् पदं **दर्शितं येन** तस्मै श्रीगुरवे नमः।

(ख) यत्कृपा तमहं **वन्दे परमानन्दसागरम्।**

(ग) **अज्ञानतिमिरान्धस्य** ज्ञानाञ्जनशलाकया।

(घ) नमामि जननीं पूज्यां **नमामि शिक्षकान्** तथा।

3. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए-

शब्दः	विभक्तिः	वचनम्
शिक्षकान् =	**द्वितीया**	**बहुवचनम्**
गुरवे =	**चतुर्थी**	**एकवचनम्**
येन =	**तृतीया**	**एकवचनम्**
गिरिम् =	**द्वितीया**	**एकवचनम्**
शलाकया =	**तृतीया**	**एकवचनम्**
तस्मै =	**चतुर्थी**	**एकवचनम्**

4. निम्नलिखित श्लोकों के अर्थ लिखिए-

(क) अज्ञानतिमिरान्धस्य ..... नमः॥

अनुवाद-जिन्होंने अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान रूपी अञ्जन शलाका (सलाई) से दूर कर हमारी आँखों को खोला है, उन गुरु को अर्थात् ईश्वर को नमस्कार है।

(ख) नमामि ..... तथा॥

अनुवाद-सुबह उठकर (प्रातःकाल) ईश्वर को नमस्कार करता हूँ, पिता को नमस्कार हूँ, पूज्या माता को नमस्कार हूँ और शिक्षकों को नमस्कार करता हूँ।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए-

(क) ईश्वरः मूकं वाचालः करोति।

(ख) सन्मार्गं दर्शितं गुरवे नमः।

(ग) ईश्वरः चराचरे व्याप्तः अस्ति।

(घ) अहं प्रतिदिनं प्रायः पितरौ नमामि।

6. सन्धि-विच्छेद कीजिए-

तमहम् = **तम्** + **अहम्**

ज्ञानाञ्जन = **ज्ञानः** + **अञ्जनः**

चराचरम् = **चर** + **अचरम्**

तत्पदम् = **तत्** + **पदम्**

7. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) व्याप्तः = ईश्वर सर्वत्र **व्याप्तः** अस्ति।

(ख) दर्शितः = गुरुणा सन्मार्गः **दर्शितः**।

(ग) उन्मीलितम् = तस्मै श्री गुरवे नमः येन चक्षुरून्मीलितम्।

(घ) वाचालः = मुकेशः **वाचालः** अस्ति।

(ङ) परमानन्दः = साधुः **परमानन्द** सागरे निमग्नो वर्तते।

(च) शिक्षकः = **शिक्षकः** शिष्याय शिक्षा ददाति।

हिंदी अनुवाद

विद्यालयेषु ..... व्यर्थम् अटति।

अनुवाद—विद्यालयों में गर्मियों की छुट्टियाँ हो गईं। सार्थक विद्यालय से प्रसन्नतापूर्वक घर आया। वह माँ को कहता है-''माँ! अब पढ़ने के लिए कुछ भी न कहना। मैं इच्छानुसार टी० वी० (चलचित्र) देखूँगा। वीडियोगेम खेलूँगा और अधिक-से-अधिक सोऊँगा। माता सब सुनती है। तत्पश्चात प्रसन्न सार्थक ने इच्छानुसार सब करना गुरु किया। एक सप्ताह में ही सार्थक के स्वेच्छापूर्वक किए व्यवहार से वह चिंतित होती है। यह बालक सातवीं कक्षा में पढ़ता है। इसके भविष्य-निर्माण का समय है। यह व्यर्थ में ही समय व्यतीत कर रहा है। यदि कुछ भी कहती हूँ तो रुष्ट हो जाता है। मेरी बात भी नहीं सुनता है। फोन पर दोस्तों से बहुत बातें करता है। और अधिक क्या इधर-उधर व्यर्थ में ही घूमता है।

अद्य पितामहेन ..... तूष्णीं तिष्ठति।

अनुवाद—आज सार्थक के दादा जी के साथ दादी जी भी गाँव से आ गईं। उन्होंने सार्थक की दिनचर्या देखी। अपने पौत्र की दिनचर्या को उसके (सार्थक) के दादा से निवेदन किया। एक दिन दादा जी ने स्नेहपूर्वक सार्थक से कहा-बेटे! मैं जानता हूँ कि तुम योग्य छात्र हो। परंतु मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारी माता तुम्हें जिस कार्य को कहती है तुम नहीं सुनते हो। तुम हमेशा कहते हो कि कल करूँगा अथवा बाद में करूँगा। आज नहीं करूँगा।

बेटे! क्या यह उचित है? मणिकान्त चुप रहता है।

पितामहः पुनः ..... अपि भवेत्।।

अनुवाद—दादा जी पुनः कहते हैं- ''अरे'' पुत्र! पागलपन में जो समय बिताता है। समयानुसार काम नहीं करता है। हमेशा कहता है-कल करूँगा, परसों करूँगा, उसके बाद करूँगा। वह कभी भी सफल नहीं होता। ''सार्थक कहता है- आप सत्य (ठीक) कहते हैं।-''

दादा जी ने फिर कहते हैं- बेटे! जीवन में समय बहुत कम है और कर्त्तव्य बहुत अधिक हैं। जो समय का सदुपयोग नहीं करता वह मूर्ख है। जो समय के महत्व को जानता है वह ही बुद्धिमान है।

सार्थक पितामह से पूछता है- ''तात (दादा जी)! छुट्टियों का सदुपयोग कैसे करूँ।'' दादा जी छुट्टियों का सदुपयोग अपनी इच्छा के अनुसार करो। बेटे! वे कार्य करो जिनसे मनोंरजन के साथ ज्ञान में भी वृद्धि हो।

अटति वत्स! अस्माकं ..... विनाशयति।

अनुवाद—बेटे! हमारे देश में जो महान पुरुष हुए हैं। उन्होंने एक भी पल (क्षण) व्यर्थ में व्यतीत नहीं किया था। महापुरुष ने कहते हैं जो व्यर्थ में ही समय व्यतीत करता हैं वह मूल्यवान जीवन भी नष्ट करता हैं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) अधुना अधिकाधिकं शयनं करिष्यामि इति सार्थकः कथयति।

(ख) सार्थकः सप्तमकक्षायां पठति।

(ग) सार्थकस्य दिनचर्यां पितामही अपश्यत्।

(घ) जीवने स्वल्पः समयः अस्ति।

(ङ) बुद्धिमान् समयस्य महत्त्वं जानाति।

(च) महान्तः पुरुषाः व्यर्थं क्षणं न यापयन्ति स्म।

2. मंजूषा (बॉक्स) में दिए गए शब्दों का यथास्थान प्रयोग करके रिक्त स्थान भरिए-

(क) अम्ब! **अधुना** पठनाय किमपि न कथनीयम्।

(ख) **अथ** सार्थकः स्वेच्छया सर्वं कर्तुम् आरभत्।

(ग) **यदि** किमपि कथयामि **तर्हि** रुष्टः भवति।

(घ) किं बहुना **इतस्ततः** व्यर्थं अटति।

(ङ) **अद्य** पितामहेन **सह** सार्थकस्य पितामही ग्रामात् आगता।

(च) **सर्वदा** कथयति **श्वः** करिष्यामि **परश्वः** करिष्यामि **पश्चात्** करिष्यामि।

3. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए

(क) अस्माकं देशे बहवः महापुरुषाः अभवन्।

(ख) मूर्खः व्यर्थम् अटति।

(ग) सः अवकाशस्य सदुपयोगं स्वेच्छया करोति।

(घ) ते समयस्य सदुपयोगं कुर्वन्ति।

(ङ) त्वं समयस्य महत्त्वं जानसि।

(च) अद्य कार्यं न करिष्यामि परश्वः वा करिष्यामिः।

4. रंगीन पदों को आधार मानकर प्रश्न बनाइए-

(क) केषु ग्रीष्मावकाशः अभवत्?

(ख) दूरभोषण कैः सह बहु आलपति?

(ग) कस्य भविष्यनिर्माणास्य समयः अस्ति?

(घ) कः मातरं कथयति?

(ङ) पितामह कम् अकथयत?

(च) कथं जीवनं विनाशयमि?

5. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति का प्रयोग करके रिक्त स्थान भरिए-

(क) सार्थक: **विद्यालयात्** गृहम् आगत:।

(ख) जननी पुत्रस्य **व्यवहारेण** चिन्तिता भवति।

(ग) मम मातामही **ग्रामात्** आगता।

(घ) क: **प्रमादेन** समयं यापयति?

(ङ) स: तानि कार्याणि करोति यै: **मनोरञ्जनेन** सह ज्ञानस्य वृद्धि: अपि भवेत्।

6. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) ग्रीष्मावकाश:-अधुना **ग्रीष्मावकाश:** अस्ति।

(ख) स्वेच्छया:-अहं **स्वेच्छया:** चलचित्रं द्रक्ष्यामि।

(ग) रुष्ट:-किमपि कथ्यामि चेत् **रूष्ट:** भवति।

(घ) दिनचर्या-सार्थकस्य दिनचर्या कीदृशी आसीत्।

(ङ) मनोरञ्जनम्-चलचित्रं सर्वेषां मनोञ्जनं करोति।

7. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए—

गृहम्: सदनम् आलय:, निकेतन:

वायु: पवन: समीर: मरूत्:

वसुधा: वसुन्धरा भूमि: पृथिवी

व्योम: आकाश: गगन: अम्बर:

8. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) राहुल: इतस्तत: समयं यापयति

(ख) सार्थक: दूरभाषेण मित्रै: सह आलपति।

(ग) य: समयानुसारं कार्यं न करोति, स: कदापि सफल: न भवति।

(घ) जीवने समय: स्वल्प: अस्ति।

(ङ) य: समयं व्यर्थं यापयति स: मूल्यवन्तम् समयं विनाशयति।

(च) अस्माकं देशे अनेका: महान्त: पुरुषा: अभवन्।

तृतीयः पाठः

बुद्धिमान् वानरः

हिंदी अनुवाद

एकस्या: नद्या: ..... खादति।

अनुवाद—एक नदी के तटपर एक जामुन का पेड़ था। जामुन के पेड़ के पर एक बंदर रहता था। वह बंदर जामुन खाकर सुखपूर्वक रहता था।

नदी में एक मगरमच्छ रहता था। एक बार मगरमच्छ हृष्ट-पुष्ट बंदर को देखता है। मगरमच्छ बंदर के स्वास्थ्य और प्रसन्नता का कारण जानना चाहता है।

मगरमच्छ बंदर से पूछता है-''दोस्त, तुम बहुत प्रसन्न और स्वस्थ हो। तुम क्या खाते हो?''

बंदर बोलता है-''मैं जामुनफल खाता हूँ, प्रसन्न और स्वस्थ होता हूँ।

मगरमच्छ-''मुझे भी जामुनफलों को दो''

(बंदर कुछ जामुन मगरमच्छ के लिए फेंकता है। मगरमच्छ उन फलों को खाता है।)

मकर: ..... खादिष्यति च।

अनुवाद—मगरमच्छ-''फल तो बहुत स्वादिष्ट हैं।'' इस प्रकार मगरमच्छ और बंदर के बीच दोस्ती होती है। एक बार कुछ जामुन मगरमच्छ अपने घर ले जाता है। घर पर मगरमच्छ की पत्नी फल खाती है, तत्पश्चात् मगरमच्छ से बोलती है-

''जो बंदर इतने स्वादिष्ट फलों को खाता है, उसका हृदयपिण्ड (दिल) क्यों नहीं स्वादिष्ट होगा। मैं बंदर का हृदयपिंड चाहती हूँ, उसी को मैं खाऊँगी।''

चिंतित मगरमच्छ बंदर के पास जाता है तथा छलपूर्वक झूठ बोलता है-''अरे दोस्त बंदर! आज तुम मेरे घर चलो। मेरी पत्नी ने तुम्हारे लिए भोजन का निमंत्रण दिया है।''

तुम मेरी पीठ पर बैठो। मैं तुम्हें ले जाऊँगा। विश्वास करके बंदर मगरमच्छ की पीठ पर बैठता है। मगरमच्छ नदी-मार्ग से बंदर को घर की ओर ले जाता है। नदी के बीच में जाकर मगरमच्छ सब कुछ सच कहता है-''बंदर! अब तुम ईश्वर को याद कर लो। मेरी पत्नी मकरी तुम्हारे हृदयपिंड को चाहती है। वह तुम्हें मारेगी और खाएंगी।

स: वानर: ..... गृहं च गच्छति।

अनुवाद—वह बंदर बुद्धिमान था तभी उसके मस्तिष्क में एक विचार आया। बंदर बोला-''अरे दोस्त! पहले क्यों नहीं बताया? मेरा हृदयपिंड तो उसी पेड़ पर ही रखा है। अत: तुम मुझे पुन: पेड़ की ओर ले चलो।

जब मगरमच्छ अपनी पीठ पर बैठे बंदर को लेकर पुन: वृक्ष की ओर आया तब बंदर जल्दी से कूदकर पेड़ पर चढ़ गया। तब बंदर मगरमच्छ से बोलता है-''अरे मूर्ख मगरमच्छ! तुम पत्नी के दास हो। उसके कहने से मेरे प्राणों को हरने की इच्छा करते हो? दोस्त को झूठ बोलते हो। अपने घर जाओ! हमारी दोस्ती खत्म हुई है अब से तुम जामुन खाने के भी अधिकारी नहीं हो। जाओ, जाओ, जाओ।

विश्वासघात करने वाला मगरमच्छ पश्चात्ताप करता है और घर चला जाता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) नद्या: तटे एक: जम्बूवृक्ष: आसीत् वानर: च तत्र तिष्ठति स्म।

(ख) मकर: वानरस्य स्वासथ्यस्य प्रसन्नताया: च कारणं ज्ञातुम् इच्छति।

(ग) मकर: स्वपत्नया: कथनानुसारं वानरं भोजनाय निमन्त्रयति।

(घ) वानरस्य मस्तिष्के एक: विचार: स्फुरति यत्-मम हृदयपिण्ड तु तस्मिन् वृक्षे एवं रक्षितम् अस्ति।

(ङ) अन्ते वानर: मकरं वदति यत् मूर्ख मकर! त्वं तु पत्नी-दास: असि। आवयो: मैत्री समाप्ता स्वग्रहं गच्छ।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) वानर: कानिचित् **जम्बूफलानि** मकरं प्रति क्षिपति।

(ख) विश्वासेन वानर: मकरस्य **पृष्ठे उपविशति**।

(ग) मकर: नदी-मार्गेण वानरं गृहं **प्रति नयति**।

(घ) मम पत्नी मकरी तु **तव हृदयपिण्डम एकदा इच्छति**।

(ङ) अधुना त्वं **ईश्वरं** स्मर।

(च) पूर्वं कथं न जल्पिण्।

3. सही वाक्य के सामने (✓) और गलत वाक्य के सामने (✗) का चिह्न लगाइए

(क) ✗, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✗, (ङ) ✓, (च) ✓

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

बुद्धिमान् = **बुद्धिहीनः** दुष्ट: = **सज्जनः**

प्रसन्न: = **अप्रसन्नः** अस्वस्थ: = **स्वस्थः**

स्वादिष्टम् = **अस्वादिष्टम्** मित्रता = **शत्रुता**

5. धातु और प्रत्यय अलग कीजिए—

ज्ञातुम् = **ज्ञा धातु** **तुमुन् प्रत्यय**

हसितुम् = **हस् धातु** **तुमुन् प्रत्यय**

चलितुम् = **चल् धातु** **तुमुन् प्रत्यय**

भ्रमितुम् = **भ्रम् धातु** **तुमुन् प्रत्यय**

हर्तुम् = **धातु** **तुमुन् प्रत्यय**

ताडयितुम् = **ताड धातु** **तुमुन् प्रत्यय**

6. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) मैं जामुन खाता हूँ, खाऊँगा स्वस्थ और प्रसन्न होता हूँ।

(ख) बंदर कुछ जामुन मगरमच्छ के लिए फेंकता है।

(ग) इस प्रकार उन दोनों मगरमच्छ और बंदर के बीच में मित्रता होती है।

(घ) घर में मगरमच्छ की पत्नी फल खाती है।

(ङ) मेरी पत्नी मकरी ने तुम्हें भोजन के लिए निमन्त्रित करती है।

(च) आज तुम मेरे घर चलो।

(छ) मैं किस प्रकार चल सकता हूँ?

(ज) तुम मेरी पीठ पर बैठो।

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) नद्या: तटे एक: जम्बुवृक्ष: आसीत्।

(ख) जम्बुवृक्षे एक: वानर: वसति स्म।

(ग) नद्याम् एक: मकर: वसति स्म।

(घ) मकर: वानरं रस्य स्वास्थ्य-विषये अगृच्छत्।

(ङ) एकता मकर: का निचित् जम्बूफलानि स्वगृहं नयति।

(च) मम पत्नी त्वां भोजनाय निमन्त्रयति।

(छ) मम पत्नी तव हृदयपिण्डं खादितुम् इच्छति।

(ज) त्वं पत्नी-दास: असि।

8. निम्नांखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) हृष्टपुष्ट: = एकदा मकर: **हृष्टपुष्टं** वानरं पश्यति।

(ख) प्रसन्न: = अहं जम्बूफलानि खादामि **प्रसन्नः** स्वस्थ: च भवामि।

(ग) विश्वास: = **विश्वासेन** वानर: मकरस्य पृष्ठे उपविशति।

(घ) हृदपिण्डाम् = मम पत्नी मकरी तु तव हृदपिण्डम् इच्छति।

(ङ) मस्तिष्के = तस्य मस्तिष्के एक: विचार: स्फुरति।

(च) बुद्धिमान् = स: वानर: बुद्धिमान् आसीत्।

(छ) पश्चात्ताप: = मकर: पश्चात्ताप: करोति।

चतुर्थः पाठः

वीरौ-कुशलवौ

हिंदी अनुवाद

प्राचीन काले ..... चन्द्रकेतुः पराजितः।

अनुवाद—प्राचीन काल में अयोध्या में रामचंद्र नाम के राजा राज्य करते थे। उनके दो पुत्र (बेटे) हुए थे कुश और

लव। बाल्यकाल (बचपन) में वे दोनों वाल्मीकि के आश्रम में रहे और वहाँ धनुष-बाण चलना सीखा।

एक बार रामचंद्र ने अश्वमेघ यज्ञ किया था। उन्होंने सभी दिशाओं की विजय के लिए घोड़े को छोड़ा था। जब कुश-लव ने उस घोड़े को आश्रम के परिसर में देखा तो तब वे दोनों उसे आश्रम में ले आए। घोड़े का रक्षक लक्ष्मण का पुत्र चन्द्रकेतु था। वह सेना के साथ आश्रम में गया और बोला-'' घोड़े को जल्दी से छोड़ दो अन्य था युद्ध करो।'' वे दोनों बालक बोले-''हम दोनों वीर महर्षि वाल्मीकि के शिष्य हैं, अधीनता को स्वीकार नहीं करते हैं। हम दोनों युद्ध के लिए तैयार हैं परंतु घोड़े को छोड़ने के लिए नही।

(तब दोनों पक्षों में युद्ध हुआ। युद्ध में कुश-लव के कौशल से चन्द्रकेतु पराजित हो गया)

इदं समाचारं ..... रामं प्रणमतः।

अनुवाद—इस समाचार को सुनकर लक्ष्मण वहाँ आ गए। उन दोनों वीरों ने उन्हें भी नहीं जीत लिया। तब राम स्वयं युद्ध स्थल पर आए और बोले-''अरे वीरो! तुम दोनों जल्दी से घोड़े को छोड़े दो!'' उसी समय ही वाल्मीकि वहाँ आ गए और बोल बेटो! ये राम तुम्हारे पिता है इन्हें प्रणाम करो, राम! ये दोनों बच्चे पालन करने योग्य हैं। युद्ध नहीं करो।

(कुश-लव राम को नमस्कार करते हैं।)

अभ्यासः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—**
   (क) रामचन्द्रः अयोध्यायां राज्यम् अकरोत्।
   (ख) वाल्मीकेः आश्रमे लवकुशौ अवसताम्।
   (ग) अश्वस्य रक्षकः चन्द्रकेतुः आसीत्।
   (घ) आम्!ताभ्यां वीराभ्यां लक्ष्मणः अपि पराजितः।
   (ङ) वाल्मीकिः राम् अकथयत्-राम! पालनीयौ इमौ वत्सौ, युद्धं नकरणीयम्।
2. **निम्नलिखित वाक्यों को सही कीजिए—**
   (क) तौ वने अवसताम्।
   (ख) रामचन्द्रः अयोध्यायां राज्यम् अकरोत्।
   (ग) कुशलवौ कौशलेन चन्द्रकेतुम् अजयताम्।
   (घ) आवां युद्धाय प्रस्तुतौ।
3. **रिक्त स्थानों को भरिए—**
   (क) तस्य द्वौ सुतौ **अभवतां कुशः लवश्च।**
   (ख) एकदा रामचन्द्रः **अश्वमेध** यज्ञम् अकरोत्।
   (ग) तौ तम् अश्वम् **आश्रमे** अनयताम्।
   (घ) आवां युद्धाय **प्रस्तुतौ** स्वः।
   (ङ) ताभ्यां .....लक्ष्मणः अपि पराजितः।
   (च) पालनीयौ इमौ **वत्सौ, युद्धं न करीणयम्।**
4. **निम्नलिखित धातुरूपों के लङ्लकार में प्रथम पुरुष के द्विवचन के रूप लिखिए—**
   दृश् = **अपश्यताम्**
   गम् = **अगच्छताम्**
   क्रीड् = **अक्रीडताम्**
   लिख् = **अलिखताम्**
   पठ् = **अपठताम्**

पञ्चमः पाठः

आर्यभट्टः

हिंदी अनुवाद

प्राचीनकाले ..... कृतवान्।

अनुवाद—प्राचीनकाल में विज्ञान क्षेत्र में हमारे देश का श्रेष्ठ स्थान था। उस समय में गौतम-कण्व-लीलावती-कणाद आदि अनेक महान वैज्ञानिक हुए थे। उन ही में आर्यभट्ट भी एक महान वैज्ञानिक हुए थे। वे नालन्दा विश्वविद्यालय के कुलपति और प्रसिद्ध खगोलशास्त्री थे। उन्होंने अपने आविष्कार से पूरे विश्व को आश्चर्यचंकित कर दिया था।

अस्य वैज्ञानिकस्य ..... दृश्यन्ते।

अनुवाद—इस वैज्ञानिक के जीवन के विषय में बहुत सीमित ज्ञान ही उपलब्ध होता है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'आर्यभटीयम्' थी। आर्यभट्ट ने ही सर्वप्रथम यह सिद्ध किया कि सृष्टि-निर्माण एक प्रक्रिया है जो अनादि से अनन्तकाल तक चलती रहती है। उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि पृथ्वी अपने केन्द्र के ऊपर घूमती है, ग्रह और तारे अन्तरिक्ष में स्थिर हैं। पृथिवी के प्रतिदिन के परिभ्रमण के कारण ग्रह और तारे घूमते हुए दिखाई देते हैं।

आर्यभटटस्य द्वितीय पुस्तकं ..... अविस्मरणीयम्।

अनुवाद—आर्यभट्ट की दूसरी पुस्तक 'सूर्य सिद्धांत' भी थी। इस पुस्तक में दिन और रात की गणना के क्रम को निर्दिष्ट किया गया था। उन्होंने सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण की सर्वप्रथम वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की थी। हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा में श्रेष्ठ वैज्ञानिक आर्यभट्ट का खगोल विज्ञान के क्षेत्र में योगदान याद रखने योग्य है अर्थात् अविस्मरणीय है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) प्राचीनकाले अस्माकं देशे गौतम-कण्व-लीलावती-कणाद-प्रभृतयः महान्तः वैज्ञानिकाः अभवन्।

(ख) 'आर्यभटीयम्' इति पुस्तकस्य लेखकः आर्यभट्टः अस्ति।

(ग) सृष्टेः निर्माणस्य एका प्रक्रिया अस्ति या अनादि अनन्तकालं यावत् प्रचलति।

(घ) आर्यभट्टस्यः द्वितीय पुस्तकस्य नाम 'सूर्य सिद्धान्तः' अस्ति।

(ङ) 'सूर्यसिद्धांत': इत्यस्मिन् पुस्तके आर्यभट्टः दिवारात्र्योः गणनायाः क्रमः प्रतिपादितवान्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) प्राचीनकाले महान्तः **वैज्ञानिकाः** अभवन्।

(ख) आर्यभट्टस्य प्रसिद्धं पुस्तकम् **आर्यभटीयम्** आसीत्।

(ग) आर्यभट्टस्य द्वितीयपुस्तकं **सूर्यसिद्धान्तः** अपि आसीत्।

(घ) आर्यभट्टस्य **खगोलविज्ञान क्षेत्रे** योदानम् अविस्मरणीयम्।

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

उपलभ्यते = **उप + लभ्यते**

इदमपि = **इदम् + अपि**

श्रेष्ठमासीत् = **श्रेष्ठम् + आसीत्**

इत्यादयः = **इति + आदयः**

केन्द्रोपरि = **केन्द्रः + उपरि**

4. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) अस्माकम् = **हमारे**

प्राचीन काले विज्ञान क्षेत्रे अस्माकं **देशस्य स्थानं श्रेष्ठमासीत्।**

(ख) स्थिराः = **स्थिर (बहु०)**

ग्रहाः तारकाः च अन्तरिक्षे स्थिराः **सन्ति।**

(ग) क्रमः = **क्रम**

अस्मिन् पुस्तके दिवारात्र्योः गणनाया क्रमः निर्दिष्टः आसीत्।

(घ) दिवा = **दिन**

सूर्य सिरान्तः इत्यस्मिन् पुस्तके दिवारात्र्योः गणनामा क्रमः निर्दिष्टः आसीत्।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) प्राचीनकाले आर्यभट्ट नाम्ना एकः महान्: वैज्ञानिकः अभवत्।

(ख) अस्य प्रसिद्धं पुस्तकम् आर्यभटीयमः अस्ति।

(ग) सूर्यसिद्धान्त अस्य द्वितीय पुस्तकम् अस्ति।

(घ) विज्ञानक्षेत्रे अस्य बहु योगदानम् अस्ति।

षष्ठमः पाठः

दीपावल्याः उत्सवः

हिंदी अनुवाद

अस्माकं भारतवर्षः ..... भवति।

अनुवाद—हमारा भारतवर्ष उत्सवों और पर्वों का देश है। यहाँ प्रचलित उत्सवों में दीपावली का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। ऐसा सुना जाता है कि इस ही दिन त्रेतायुग में मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र ने पिता की आज्ञा का पालन कर चौदह वर्ष तक वनवास कर, राक्षसराज रावण को मारकर, सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस आए। तब अयोध्या के लोगों ने दीपों की अवली (माला या पंक्ति) बनाकर दीप प्रज्वलित कर उनका अभिनन्दन किया था। अतएव इस पर्व को 'दीपावली' इस नाम से मानते हैं। यह पर्व कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन होता है।

केचन विद्वांसः ..... पूजनं क्रियते।

अनुवाद—कुछ विद्वान कहते हैं कि कार्तिक महीने की अमावस्या के ही दिन भगवती महालक्ष्मी सागर के मध्य से उत्पन्न हुई थीं। और दूसरे कहते हैं कि इसी दिन लक्ष्मी बल के बंधन से विमुक्त हुई थीं। अतएव इस दिन लक्ष्मी का पूजन होता है। इस दिन लोग घरों की सब प्रकार से शुद्धि और सज्जा करते हैं। सफेदी से रंगे हुए घर नई दुल्हन की तरह सुशोभित होते हैं। सभी लोग नए कपड़े पहनते हैं। सायं काल में दीपों को जलाकर घरों में, मंदिरों मे और द्वारों पर रखते हैं। तब दीपों की माला बहुत सुशोभित होती है। रात में श्री गणेश के साथ लक्ष्मी का पूजन किया जाता है।

जनाः स्वमित्रेभ्यः ..... प्रकाशं कुर्मः।

अनुवाद—लोग अपने मित्रों और बन्धुओं को मिठाई बाँटते हैं। दूसरे दिन प्रतिपदा में प्रातःकाल गोवर्धन-पूजा होती है। उसके उपरान्त अपनी बहन के घर में भोजन करके लोग उन्हें यथाशक्ति (अपनी इच्छानुसार) द्रव्य (रुपये) देते हैं।

यह उत्सव हर्ष और उल्लास को पैदा करता है। इस उत्सव इसका संदेश है कि हमें अविद्यारूपी अंधकार को नष्ट करके अपने जीवन में प्रकाश करना चाहिए।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) दीपावल्या: उत्सव: कार्तिक मासस्य अमावस्यायां भवति।

(ख) श्रीराम: पितु: आज्ञां परिपालयन् चतुर्दशवर्ष पर्यन्तं वनम् उष्तिवान्।

(ग) अस्मिन् दिने लक्ष्म्या: पूजनं क्रियते।

(घ) अस्य उत्सवस्य सन्देश: अस्ति यत् वयम् अविद्यान्धकारं विनाश्य स्व जीवने ज्ञानस्य प्रकाशं कुर्म:।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) अस्माकं भारतवर्ष: **उत्सवानां पर्वाणां** च देश: वर्तते।

(ख) इदं पर्व **कार्तिकमासस्य** अमावस्यायां भवति।

(ग) अस्मिन् दिने लक्ष्म्या: पूजनं भवति।

(घ) सुधाधवलितानि गृहाणि **नववधूरिव** भासन्ते।

(ङ) द्वितीय दिने प्रतिपादि प्रात:काले **गोवर्धनपूजा** भवति।

(च) अयम् उत्सव: **हर्षोल्लासं** जनयति।

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

महोत्सवेषु महा + उत्सवेषु
सूर्योदय: सूर्य + उदय:
हर्षोल्लासम् हर्ष + उल्लासम्
अविद्यान्धकारम् अविद्या + अन्धकारम्
तदनन्तरम् तद् + अनन्तरम्

4. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अस्माकं भारतवर्ष: उत्सवानां देश: वर्तते।

(ख) इदं पर्व 'दीपावली' इति नाम्ना मन्यते।

(ग) रात्रौ देवीलक्ष्म्या: पूजनं भवति।

(घ) दीपावल्या: त्योहारं: अन्धकारे प्रकाशस्य विजयस्य प्रतीकम् अस्ति।

(ङ) सर्वे जना: स्वमित्रेभ्य: मिष्टान्नं वितरन्ति।

5. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) हमारा देश पर्वों का देश है।

(ख) अयोध्यावासियों ने श्रीराम के आने पर घी के दीप जलाए थे।

(ग) इस दिन सजे हुए घर नववधू की तरह सुशोभित होते हैं।

(घ) यह त्योहार लोगों के हृदयों में हर्ष और उल्लास को पैदा करता है।

6. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) सर्वश्रेष्ठम् = महोत्सवेषु दीपावल्या: स्थानं **सर्वश्रेष्ठम्** अस्ति।

(ख) राक्षसराज: = **राक्षसराज:** रावण: सीता हृत्वा स्वगृहे नयति।

(ग) विमुक्ता = अस्मिन् दिने लक्ष्मी: बले: बन्धनात् **विमुक्ता** अभवन्।

(घ) भासन्ते = अस्मिन् दिने सज्जितानि गृहाणि नववधूरिव **भासन्ते**।

(ङ) पूजनम् = रात्रौ लक्ष्म्या: पूजनं भवति।

7. सही वाक्य के सामने (✓) और गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए

(क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✓

8. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए—

महोत्सवेषु = **महान उत्सवों में** श्रूयते = **सुना जाता है**
प्रज्वाल्य = **प्रज्वल्लि करके** यथाशक्ति: = **शक्ति अनुसार**
विनाश्यं = **विनाश अथवा नष्ट करके** प्रकाश: = **उजाला**

सप्तमः पाठः — नीतिवचनानि

हिंदी अनुवाद

वृत्तं यत्नेन ..... हतो हत:।।

अनुवाद—चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए, धन तो आता है और चला जाता है। धन के नष्ट होने पर कुछ भी नष्ट नहीं होता परंतु चरित्र के नष्ट हो जाने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है।

सत्यं ब्रूयात् ..... सनातन:।।

अनुवाद—प्रिय और सत्य बोलना चाहिए। अप्रिय सत्य नहीं

बोलना चाहिए और असत्य प्रिय नहीं बोलना चाहिए यही सनातन धर्म है।

अक्रोधेन ..... नान्ततम्।।

अनुवाद—क्रोध को अक्रोध से जीतना चाहिए, असाधु को साधु से जीतना चाहिए, कंजूस को दान से जीतना चाहिए और असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।

मनसा ..... नियोजयेत्।

अनुवाद—मन में विचार किए गए कार्य को वाणी से नहीं कहना चाहिए। मन्त्र की भाँति रहस्य की रक्षा करनी चाहिए और कार्यों को नियोजित करते रहना चाहिए।

अनाहूतः ..... नराधमः।।

अनुवाद—जो बिना बुलाए प्रवेश करता है बिना पूछे बहुत बोलता है अविश्वासी पर विश्वास करता है ऐसे मूर्ख चित वाला नर अधम होता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) वृतं यत्नेन संरक्षेत्।

(ख) प्रियम् अनृतं न ब्रूयात् एषः एव धर्मः सनातनः।

(ग) कदर्यं दानेन जयेत्।

(घ) मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) वृत्तं **यत्नेन संरक्षेत् वित्तमायाति यति** च।
अक्षीणोः वित्ततः क्षीणो वृत्तस्तु हतो हतः।।

(ख) अक्रोधेन **जयेत् क्रोध साधुं असाधुना जयेत्।**
जयेत् **कदर्यं दानेन जयेत सत्येन** नानृतम्।

(ग) अनाहूतः **प्रविशति अपृष्टो बहु** भाषते।
अविपूवस्ते विश्वसिति मूढ़चेता नराधमः।।

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

नानृतम् = **न + अनृतम्**

वृत्तस्तु = **वृत्तः + अस्तु**

सत्यमप्रियम् = **सत्यम् + अप्रियम्**

अनाहूतः = **अन् + आहूतः**

नराधमः = **नरः + अधमः**

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) दानम् = **संग्रहः**
कदर्यं दानेन **जयेत्।**

(ख) सत्यम् = **अनृतम**
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्।

(ग) साधुः = **असाधुः**
असाधु साधुना जयेत्।

(घ) प्रियम् = **अप्रियम्**
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्।

(ङ) क्रोधम् = **शान्तः (अक्रोधम्)**
क्रोधम् अक्रोधेन जयेत्।

5. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए—

शब्दः	**विभक्तिः**	**वचनम्**
कार्ये =	**सप्तमी**	**एकवचनम्**
प्रियम् =	**द्वितीया**	**एकवचनम्**
दानेन =	**तृतीया**	**एकवचनम्**
यत्नेन =	**तृतीया**	**एकवचनम्**
अक्रोधेन =	**तृतीया**	**एकवचनम्**
मनसा =	**तृतीया**	**एकवचनम्**

6. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) चरित्रस्य यत्नपूर्वकं रक्षा करणीया।

(ख) प्रियं नानृतं ब्रूयात्।

(ग) सदा सत्यं ब्रूयात।

(घ) कदर्यं दानेन जयेत्।

7. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए—

सत्यम् + अप्रियम् = **सत्यमप्रियम्**

वित्तम् + आयाति = **वित्तमायाति**

वृत्तः + अस्तु = **वृत्तस्तु**

न + अनृतम् = **नानृतम्**

अन् + आहूतः = **अना हूतः**

नरः + अधमः = **नराधमः**

8. निम्नलिखित श्लोकों के अर्थ लिखिए—

(क) सत्यं ब्रूयात् .....सनातनः।

अनुवाद—सत्य बोलना चाहिए और प्रिय बोलना चाहिए और अप्रिय सत्य नहीं बोला चाहिए असत्य प्रिय नहीं बोला चाहिए, यही सनातन धर्म है।

(ख) अनाहूतः ..... नराधमः।।

अनुवाद—जो बिना बुलाए प्रवेश करता है, बिना पूछे बहुत बोलता है, अविश्वासी पर विश्वास करता है, ऐसे मूर्ख चित्त वाला नर अधम होता है।

हिंदी अनुवाद

प्राचीनकाले ..... अभोजयत्।

अनुवाद—प्राचीन काल में श्रीकृष्ण और सुदामा नामक ब्राह्मण पुत्र दोनों गुरु सन्दीपन के आश्रम में विद्या ग्रहण करते थे। कालांतर में कृष्ण द्वारका के राजा हुए और सुदामा निर्धन ही रह गए।

एक बार पत्नी के द्वारा प्रेरित किए जाने पर सुदामा श्री कृष्ण के दर्शन के लिए द्वारका गए। जब द्वारपाल ने श्रीकृष्ण को ब्राह्मण के आने की सूचना दी, उसी क्षण ही वे उनके स्वागतार्थ दौड़े आए और स्वयं ही उसके पैरों को धोने लगे। उन्हें हृदय से गले लगाया और प्रेमपूर्वक भोजन कराया।

यदा सुदामा ..... सफली भूतम्।

अनुवाद—जब सुदामा आसन पर बैठे थे तब श्रीकृष्ण ने कहा-''मित्र! क्या तुम्हें याद है जब हम दोनों गुरुकुल में रहते थे वहाँ पढ़ते थे और वन में फूलों का फलों का और लकड़ियों का चयन कर रहे थे, तभी एक तूफान (झंझावात) आ गया। हम दोनों वन में घूम रहे थे। तब सूर्य भी अस्त हो गया था, हम दोनों डर रहे थे, इसके बाद पूज्य गुरुजीने हमें खोजा और कहा-''मेरे प्रिय शिष्यो! तुम दोनों ने मेरी सेवा की, मैं तुम्हारे व्यवहार से प्रसन्न हूँ, मेरा पढ़ाना सफल हुआ।

सुदामा बोले-''मित्रं! सत्य मैं वह सारा वृत्तांत याद करता हूँ। गुरुकुल में हम दोनों का निवास कितना सुखकर था, यह कहने में असमर्थ हूँ। तुम्हारे स्नेह से मैं कृतकृत्य हो गया हूँ। तुम्हारे साथ मेरा अध्ययन आज सफल हुआ।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) श्रीकृष्णः सुदामा नाम्नः ब्राह्मणश्च सन्दीपनस्य आश्रमे विद्याम् अपठताम्।

(ख) कालान्तरे सुदामा निर्धनः एव अतिष्ठत्।

(ग) श्रीकृष्णः सुदामायाः स्वागतार्थम् अधावत्।

(घ) कृष्णस्य कथनानुसारेण गुरुणा उक्तमासीत् यत् ''अहं युवयोः व्यवहारेण प्रसन्नोऽस्मि, मम अध्यापनं सफलम् अभवत्।''

(ङ) ''मम अध्ययनम् अद्य सफलीभूतम्'' एतत् सुदामाया उक्तम्।

2. रिक्त स्थानों को भरिए—

(क) कालान्तरे कृष्णः द्वारकायाः **राजा** अभवत्।

(ख) तदैव झंझावातः **आगच्छत्**।

(ग) अनन्तरं पूज्यः गुरुः आवयोः **अन्वेषणम्** अकरोत्।

(घ) युवां मम सेवाम् **अकुरुतम्**।

(ङ) अहं युवयोः व्यवहारेण **प्रसन्नोऽस्मि**।

(च) गुरुकुले आवयोः निवासः कियत् सुखकरः **आसीत्।**

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) आवां गुरुकुले अपठाव।

(ख) आवां वने अगच्छाव।

(ग) आवां सहैव पुष्पाणां चयनम् अकुर्व।

(घ) आवां सहैद अपठाव।

(ङ) अहं युवयोः व्यावहारेण प्रसन्नोऽस्मि।

(च) तव स्नेहेन अहं धन्यः अभवय्।

4. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(क) छात्रौ-द्वौ **छात्रौ** आश्रमे विद्याम् अपठताम्।

(ख) कालान्तरे-**कालान्तरे** कृष्णः द्वारकायाः राजा अभवत्।

(ग) प्रेरितः करता हूँ एकदा भार्यया **प्रेरितः** सुदामा कृष्णस्य दर्शनाय द्वारकां प्रति अगच्छत्।

(घ) चरणौ-कृष्णः तस्य **चरणौ** प्रक्षालयत्।

(ङ) अभोजयत्-तं प्रीतिपूर्वकं **अभोजयत्**।

(च) अध्ययनम्-त्वया सह मम **अध्ययनम्** अद्य सफली भूतम्।

(छ) चयनम्-वने आवां फलानां **चयनम्** अकुर्व।

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(क) आवां वने बहुकालफर्यन्तम् अभ्रमाव।

(ख) अस्माकं परिश्रमः अद्य सफली भूतः।

(ग) मयूराः वने अनृत्यन्।

(घ) यमुनातटे खगाः कलरवम् अकुरुत्।

(ङ) आवां विद्यालये संस्कृत अपठाव।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए—

मित्रम् = **शत्रुः** विद्या = **अविद्या**

राजा = **भिक्षुः** धनिकः = **निर्धनः**

भार्या = **पतिः** प्रेमः = **घृणा**

अस्तः = **उदयः** सुखकरः = **दुःखकरः**

सफलः = **विफलः** समर्थः = **असमर्थः**

7. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए—

ब्राह्मण: + च = **ब्राह्मणश्च**

तत् + क्षणम् + एव = **तत्क्षणमेव**

अनु + एषणम् = **अन्वेषणम्**

प्रसन्न: + अस्मि = **प्रसन्नोऽस्मि**

हिंदी अनुवाद

नवमः पाठः

अरण्यम्

अरण्यम् ..... कुरूजाङ्गलम्॥

अनुवाद—वन हमें वनस्पति देता है। यह वन्य प्राणियों की रक्षा करता है और औषधि देता हैं।

वन में पशु चरते हैं। अनेक पशु निवास करते हैं। वनों का न्याय प्रसिद्ध है। वहाँ सभी स्वतंत्र रूप से चरते हैं। वन में अनेक पक्षी पेड़ों पर निवास करते हैं। वहाँ कोयल कूकती हैं, मोर नाचते हैं, शेर गजरते हैं, हाथी चिंघाड़ते हैं। सभी जगह मन को हरने वाला सौंदर्य है। जहाँ युद्ध आदि कुत्सित (बुरे) काम नहीं होता है अरण्य हो सकता है ऐसा भी कहे जाते हैं। स्वाधीन भारत वर्ष में सरकार के आदेश पर अभयारण्यों का निर्माण हुआ 'वनसम्पदा, राष्ट्रसम्पदा का तीसरा भाग वन ही होना चाहिए। वृक्षारोपण संविधान-सम्मत कार्य है। प्राचीन काल में ऋषि वन में रहते थे।

वहाँ वे तपस्या करते थे और मंत्रों को बोलते थे। भारत में दण्डकादि नौ अरण्य (वन) मोक्ष देने वाले कहे जाते हैं। वे हैं- दण्डक, सैन्धव वन जम्बुमार्ग और पुष्कर,

उत्पलावर्त्तकवन नैमिष कुरूजाङ्गल वन।

रामः ..... जीवन शैली वर्तते।

अनुवाद—राम चौदह वर्षों तक लक्ष्मण और सीता के साथ वन-वन में घूमे थे। पांडवों ने भी बारह (12) वर्षों तक वन में निवास किया था। बुद्ध ने वन में तपस्या की थी। मुनि साधु, संन्यासी, तपस्या करने वाले आत्मा की खोज करने वाले ऋषि आदि सभी वन को गए और सत्य की खोज के लिए तपस्या की। बृहदारण्यकोपनिषद महान ग्रंथ ने अरण्य-जीवन की स्मृति है।

पर्यटक घूमने के लिए वन में जाते है। पिकनिक वर्तमान समय में आनन्दमूला जीवनशैली है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) अरण्यम् अस्मभ्यं वनस्पतिं ददाति।

(ख) अरण्ये मृगाश्चरन्ति, नाना पशव: निवसन्ति, नाना पक्षिण: वृक्षेषु निवसन्ति।

(ग) पुराकाले ऋषय: अरण्ये वसन्ति स्म।

(घ) अरण्ये ऋषय: तप: कुर्वन्ति स्म, मन्त्रान् वदन्ति स्म।

(ङ) वनस्म्पदा राष्ट्रस्य सम्पदा अस्ति।

(च) पर्यटका: अभयारण्यं वनान्तरम् अनुगच्छन्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) नाना पशव: **अरण्ये** निवसन्ति।

(ख) अरण्ये मृगा: **चरन्ति**।

(ग) अरण्ये नाना पक्षिण: **वृक्षेषु** निवसन्ति।

(घ) राष्ट्रसम्पदाया: तृतीयांश: **अरण्यं** भवेत्।

(ङ) पुराकाले ऋषय: **अरण्ये** वसन्ति स्म।

(च) बुद्ध: वने **तपश्** चकार।

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) वन हमें वनस्पति देते हैं।

(ख) वन में पशु चरते हैं।

(ग) वन में अनेक प्रकार के पक्षी पेड़ पर रहते हैं।

(घ) सभी जगह मनोहरी सौंदर्य (सुंदरता) दिखाई देता है।

(ङ) प्राचीन काल में ऋषि वन में रहते थे।

(च) भारत में दण्डक आदि नवारण्य मोक्ष प्रदान कारी कहे जाते हैं।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अरण्यम् अस्मभ्यं वनस्पतिम् औषधं च ददाति।

(ख) राष्ट्रसम्पदाया: तृतीयांश: अरण्यं भवेत्।

(ग) वने नाना पशव:-पक्षिणश्च निवसन्ति।

(घ) पुराकाले ऋषय: मुनय: वने वसन्ति स्म।

(ङ) तत्र कोकिला कूजन्ति मयूराश्च नृत्यन्ति।

(च) वनसम्पदा राष्ट्रसम्पदा अस्ति।

5. सही वाक्य के सामने (✓) और गलत वाक्य के सामने (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✓, (च) ✓, (छ) ✓, (ज) ✓

6. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

मृगाश्चन्ति = **मृगा: + चरन्ति**

तृतीयांश: = **तृतीय: + अंश:**

तपश्चरणम् = **तपः + चरणम्**

तपश्चकार = **तपः + चकार**

7. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और संस्कृत में वाक्य बनाइए—

(क) अरण्यम् = **जंगल**

अरण्यम् **अस्मभ्यं वनस्पतिं ददाति।**

(ख) अनुगच्छति = **पीछे जाता है**

पर्यटकः अभयारण्यं वनान्तरम् अनुगच्छति।

(ग) वनसम्पदा = **जंगल की धरोहर**

वनसम्पदा **राष्ट्रसम्पदायाः तृतीयांशः अरण्यं भवेत्।**

(घ) वनभोजः = **पिकनिक**

वनभोजः वर्तमान काले आनन्दमूला जीवनशैली वर्तते।

(ङ) वृक्षारोपणम् = **वृक्ष लगाना**

बालकाः वृक्षारोपणं **कुर्वन्ति।**

(च) तपश्चरणम् = **तपस्या करना**

बुद्धः वने तपश्चकार।

(छ) मन्त्रान् = **मत्रों को**

ऋषयः मुनयः मन्त्रान् वदन्ति।

(ज) पुराकाले = **प्राचीन काल (समय) मे**

पुरा काले ऋषयः मुनयः अरण्ये वसन्ति स्म।

8. चित्रों को देखकर वाक्य पूरे कीजिए-

(क) बुद्धः वने **तपश्चकार**।

(ख) अरण्ये जनाः **भ्रमणाय** अपि गच्छन्ति।

(ग) वने नाना **पक्षिणः पशवश्च** निवसन्ति।

दशमः पाठः

क्रान्तिकारी सुखदेवः

हिंदी अनुवाद

आंग्लशासकानां ..... सर्वे जानन्ति।

अनुवाद—अंग्रेजी शासन की दासता से मुक्ति प्राप्त करने के लिए सभी देशवासी लगे हुए थे। किंतु दूसरा पक्ष जो अहिंसा के विपरीत मार्ग को मानता था। उनमें प्रथम पक्ष का विचार था कि सत्य-अहिंसा और सत्याग्रहान्दोलन से स्वतंत्रता की प्राप्ति होगी। वे 'शठे शाठयं समाचरेत्' 'अर्थात् दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिए।' इस भावना के रूप में अगसर थे। पंजाब प्रदेश के कुछ नवयुवक उत्साहपूर्वक कार्यरत थे वे भगतसिंह, राजगुरु आदि थे। अंग्रेजी शासन के विद्रोह के लिए विस्फोटक पदार्थो की पूर्ति में कार्यरत भारतीय नवयुवक क्रांतिकारी सुखदेव का नाम सभी जानते हैं।

सुखदेवस्य ..... भूमिका आसीत्।

अनुवाद—सुखदेव का जन्म पंजाब प्रदेश के लुधियाना जिले के निराव गाँव में 1907 ई० में 15 मई को हुआ था। क्रांतिकारी सुखदेव की माता रत्नादेवी और पिता रामपाल थे। 9 सितंबर 1928 ई० में इंद्रप्रस्थ में (दिल्ली में) क्रांतिकारियों को संगठित करके सशक्त क्रांति का उत्तरदायित्व उन्हें दिया गया। इस समय सुखदेव अपनी शिक्षा अध्ययन में कार्यरत थे। क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आकर उन्हें ज्ञात हुआ कि जिसके शासन में कभी भी सूर्यास्त नहीं हुआ इस प्रकार के बृहत शक्तिशली शासक के विरुद्ध हथियारों के बिना संघर्ष करना असंभव है। पंजाब प्रदेश के क्रांतिकारी भगतसिंह और राजगुरु को बाहर निकालने करने में सुखदेव की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

सुखदेवस्य ..... मृत्युम् अददात्।

अनुवाद—सुखदेव के हाथ के ऊपर सुखदेव ऐसा लिखा हुआ था इस कारण से किसी भी समय में पहचाने जा सकते थे। अतः उन्होंने अपने हाथ के ऊपर जलाने वाले तीक्ष्ण अम्ल को डालकर अग्नि में रखकर उसे मिटाना चाहा परंतु उनका नाम नहीं मिटा। उसके बाद नामांकित हाथ के ऊपर लिखे नाम को मोमबत्ती से जलाया। सुखदेव कुशल संगठनकर्ता और दूरदर्शी थे। उन्होंने विस्फोटक पदार्थो के निर्माण की शिक्षा प्राप्त करके लवपुर (लाहौर) में विस्फोटक पदार्थों की उद्योगशाला गुप्त रूप से चलाई। थोड़ी ही समय में वे विस्फोटक पदार्थों के निर्माण में दक्ष (कुशल) हो गए। क्रांतिकारियों के लिए विस्फोटकों का निर्यात इनके माध्यम से हुआ था। अंग्रेज शासकों के गुप्तचर ने उन्हें सूचना देकर बंदी करवाया। 24 वर्षीय सुखदेव को भगतसिंह और राजगुरु के साथ 23 मार्च 1931 ई० को अंग्रेज शासकों द्वारा फाँसी दी गई थी।

क्रान्तिकारीणां बलिदानः ..... करोति।

अनुवाद—क्रांतिकारियों का यह बलिदान कभी भी व्यर्थ नहीं जाता है। परिणामस्वरूप उनसे अनुप्राणित देश की प्रजा विद्रोह करके देश की स्वतंत्रता के लिए संलग्न हो गई।

अमरता को प्राप्त करने वाले सुखदेव के जन्म पर भारतवर्ष गौरव का अनुभव करता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) सुखदेवस्य जन्म सन् अष्टदिंशमधिकम् एकोनविंशतितमे मईमासस्य पञ्चदश दिनांके अभवत्।

(ख) देशवासिनां प्रथमपक्षस्य विचारासीत् यत् सत्याहिंसा-सत्याग्रहान्दोलनेन च स्वतन्त्रता प्राप्तिः भविष्यति।

(ग) सुखदेवः द्वितीय दलस्य क्रान्तिकारी आसीत्।

(घ) सुखदेवस्य हस्तोपरि 'सुखदेवः' इति अंकितम् आसीत्।

(ङ) एकत्रिंशमधिक मेकोनविंशतितमे मार्चमासस्य त्रयोविंशतिदिनांके सुखदेवः मृत्युं प्राप्नोत्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) परं द्वितीयपक्षरासीत् यः अहिंसाविपर्यया **दिशामार्गे** प्रशस्तासीत्।

(ख) सुखदेवस्य जन्म **पाञ्चाल** प्रदेशस्य **लुधियाना** जनपदस्य निरावग्रामे अभवत्।

(ग) तदुपरान्ते नामांकितं हस्तम् आदाय **द्रावर्तिकया** ज्वल्यमानं कृतवान्।

(घ) आंग्लशासकस्य **गुप्तचरेण तं** सूचनया बन्दीकृतम्।

(ङ) **क्रांतिकारिणां** बलिदानः कदापि व्यर्थं न जायते।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) सुखदेवस्य जन्म लुधियाना जनपदान्तर्गते निरावग्रामे अभवत्।

(ख) सुखदेवः एकः सशक्तः क्रान्तिकारी आसीत्।

(ग) सुखदेवस्य हस्तोऽपरि 'सुखदेव' इति नामां कितमासीत्।

(घ) सुखदेवाय भगतसिंहः राजगुरुभ्यां सहितं रज्जुपाशैः मृत्युम् अददात्।

(ङ) देशभक्ताणां दलद्वयमासीत्- उग्रदलः विनम्रदलश्च।

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और इनकी वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए—

(क) स्वहस्तोऽपरि = **अपने हाथ के ऊपर**
सुखदेवस्य स्वहस्तोऽरि **'सुखदेव' इति नामांकितमासीत्।**

(ख) संगठिकृत्य = **संगठन करके**
इन्द्रप्रस्थे क्रांतिकारिणान् संगठिकृत्य **सशक्तः क्रान्त्योत्तरदायित्वं तस्मै दत्तम्।**

(ग) गुप्तचरेण = **गुप्तचर के द्वारा**
आंग्लशासकस्य गुप्तचरेण तं सूचनया बन्दीकृतम्।

(घ) निर्यातम् = **भेजना**
क्रान्तिकरियः विस्फोटकानां निर्यातं सुखदेवस्य माध्यममेन अभवत्।

(ङ) कार्यरतेषु = **काम में लगे हुए**
आंग्लशासनविद्रोहाय विस्फोटक पदार्थापूर्तिं कार्यरतेषु भारतीय नवयुवकेषु क्रान्तिकारी सुखदेवस्य नाम सर्वे जानन्ति।

(च) दूरदर्शी = **दूरदृष्टि वाले**
सुखदेवः कुशल संगठकर्ता दूरदर्शी चासीत्।

5. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) सुखदेव का जन्म पंजाब प्रदेश के लुधियाना जिले के निराव गाँव में हुआ था।

(ख) इस समय सुखदेव अपनी शिक्षा पूरी करने में कार्यरत थे।

(ग) सुखदेव के हाथ पर 'सुखदेव' गुदा हुआ था।

(घ) सुखदेव कुशल संगठन करने वाले दूरदृष्टि वाले थे।

(ङ) क्रान्तिकारियों के लिए विस्फोट सामान का निर्यात सुखदेव के द्वारा होता था।

(च) सुखदेव के जन्म शताब्दी पर भारत गौरव का अनुभव करता है।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए-

पुरुषः = **स्त्री** मुक्तिः = **बन्धनः**
शठः = **सज्जनः** पूरितः = **रिक्तः**
जनकः = **जननी** संघर्षः = **शान्तिः**
सूर्यास्तः = **सूर्योदयः** मृत्युः = **जन्मः**

हिंदी अनुवाद

कमलः आचार्यवर! ..... जीवितुं शक्नोति।

अनुवाद—

कमल : आचार्य जी! कल सामान्य ज्ञान की प्रतियोगिता होगी। आयुर्वेद के विषय में मेरी अधिक जानकारी नहीं है। कृपया आप मेरी सहायता करें।

आचार्य जी : अच्छा, बेटे! क्या तुम जानते हो वेद कितने हैं?

कमल : जानता हूँ महादेव! चार वेद है। उनके नाम हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थ वेद।

आचार्य जी : अच्छा! इसी प्रकार से चार उपवेद भी है; जैसे—आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थशास्त्र। उपवेद में पहला आयुर्वेद मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम है।

कमल : आयुर्वेद का आरंभ कब हुआ?

आचार्य जी : अरे! अनन्तकाल से देव और ऋषि आयुर्वेद का प्रचार कर रहे हैं। मनुष्य लोक में धन्वन्तरि इसके प्रथम प्रचारक माने जाते हैं। इसके पश्चात् चरक-सुश्रुत-वाग्भट्ट आदि आयुर्वेद के प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं। उन्होंने कहा है कि-''आयुर्वेद के नियमों के पालन से मनुष्य सौ वर्षों तक सुखपूर्वक स्वस्थ जीवन यापन कर सकता है।''

कमलः मनुष्यः कथं ..... सज्जः अस्मि।

अनुवाद—

कमल : मनुष्य किस प्रकार से रोगी होता है आचार्य जी?

आचार्य जी : अयुर्वेद के अनुसार शरीर में 'बात-पित्त-कफ' ये तीन दोष होते हैं। जब मिथ्या आहार (भोजन) से और मिथ्या विहार (भ्रमण) से ये कुपित हो जाते हैं तब मनुष्य रोगी होता है।

कमल : आचार्य जी! मनुष्य स्वास्य लाभ कैसे करता है?

आचार्य जी : आयुर्वेद में रोग का निदान है। समुचित आहार का पालन करने से मनुष्य सदैव स्वस्थ होता (रहता) है।

कमल : कृपया औषधियों (दवाइयों) के नाम भी बताइए जिनके द्वारा लोग (मनुष्य) दीर्घ आयु को प्राप्त करते हैं।

आचार्य : हरड, बहेडा और आँवला इस प्रकार की औषधियाँ है। 'त्रिफला' आयु को बढ़ाने वाला और रोग निवारक होता है।

कमल : इस प्रकार आजकल रोगी मनुष्य आयुर्वेद को पुनः सम्मान देने लगे हैं।

आचार्य जी : हाँ! यह भी समझो कि औषधियों का प्रयोग अनेक प्रकार से होता है जैसे- काणदि चूर्ण, अर्क, चटनी, गोली, रस और रसायन। आयुर्वेद का प्रचार विदेशों में भी हो रहा है।

कमल : धन्यवाद आचार्य जी! अब मैं प्रतियोगिता के लिए तैयार हूँ।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) आयुर्वेदः मनुष्याणां स्वास्थ्यलाभाय सर्वोत्तमः हेतुः अस्ति।

(ख) आयुर्वेदस्य प्रथमः प्रचारकः धन्वन्तरिः अस्ति।

(ग) वेदाः चत्वकारः सन्तिः तेषां नामानि ऋग्वेदः यजुर्वेदः, समवेदः, अथर्ववेदः च।

(घ) उपवेदाः चत्वारः सन्ति तेषां नामानि आयुर्वेदः, धनुर्वेदः, गान्धर्ववेदः, अर्थशास्त्रं: च।

(ङ) 'हरीतकीं विभीतकं आमलकं' इति त्रिफला कथ्यते।

2. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए और लिखिए—

उपवेदाः = **आयुर्वेदः धनुर्वेदः गान्धर्ववेदः अर्थशास्त्रः** आयुर्वेदः = **एकः उपवेदः**

औषधिः = **स्वास्थ्यलाभाय**

सुश्रुतः = **आयुर्वेदस्य आचार्यः**

वाग्भट्टः = **आयुर्वेदस्य आचार्यः**

धन्वन्तरिः = **आयुर्वेदस्य आचार्यः अस्ति।**

3. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

नाधिकम् = **न + अधिकम्**

विदेशष्वपि = **विदेशेषु + अपि**

अधुनाहम् = **अधुना + अहम्**

मिथ्याहारेण = **मिथ्या + आहारेण**

अयुर्वेदानुसारम् = **आयुर्वेद + अनुसारम्**

4. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति, वचन और लिंग लिखिए—

शब्दः	विभक्तिः	वचनम्	लिङ्गः
चत्वारः	**प्रथमा**	**बहुवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
शतवर्षाणि	**प्रथमा**	**बहुवचनम्**	**नपुंसकलिङ्गः**
उपवेदाः	**प्रथमा**	**बहवुचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
समुचित-पथ्यपालनेन	**तृतीया**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
गुटिका	**प्रथमा**	**एकवचनम्**	**स्त्रीलिङ्गः**
स्वास्थ्यलाभाय	**चतुर्थी**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
औषधीनाम्	**द्वितीया**	**एकवचनम्**	**पुल्लिङ्गः**
स्पर्धायाः	**षष्ठी**	**एकवचनम्**	**स्त्रीलिङ्गः**

5. चित्रं दृष्ट्वा तेषां नामानि लिखत—

घृतकुमारी **जायफालः तुलसी**

आमलकम् कृष्णमरिचम्

6. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) स्पर्धा = **प्रतियोगिता**

श्वः सामान्यज्ञानस्पर्धा भविष्यति।

(ख) शोभनम् = **सुंदर**

कमलः-आचार्यवर! वेदाः चत्वार सन्ति। आचार्यवरः-शोभनम्।

(ग) प्रचारकः = **प्रचार करने वाला**

मनुष्यलोके तु धन्वन्तरि अस्य प्रथमः प्रचारकः मन्यते।

(घ) सुखेन = **सुख से**

आयुर्वेस्य नियमानां पालनेन मानवः सुखेन शतवर्षाणि जीवितं शक्नोति।

(ङ) रुग्णः = **रोगी**

मनुष्यः कथं रुग्णः भवति?

(च) दीर्घायुः = **अधिक आयु**

कृपया औषधीनां नामानि अपि वदतु याभिः जनाः दीर्घायुः प्राप्नुवन्ति।

द्वादशः पाठः

श्री जवाहरलाल नेहरूः

हिंदी अनुवाद

अस्माकं ..... आसीत्।

अनुवाद—हमारे देश में अनेक महापुरुष हुए हैं। कुछ राजनेता, कुछ समाज सुधारक, दूसरे वैज्ञानिक और विद्वान थे। राष्ट्रभक्तों में पं० नेहरू का नाम अग्रणी है। इस महाभाग (महोदय) का नाम पं० जवाहरलाल नेहरू था। इनके पिता का नाम पं० मोतीलाल नेहरू था। वे भारत के प्रसिद्ध वकील थे।

पं० जवाहरलालस्य ..... प्राप्तवान्।

अनुवाद—पं० जवाहरलाल का जन्म इलाहाबाद नगर में 1889 ई० में 14 नवंबर को हुआ था। उनका विशेष लालन-पालन हुआ। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर वे ब्रिटेन गए। वहाँ उन्होंने कानून की पढ़ाई पढ़कर 'बैरिस्टर' की उपाधि प्राप्त की थी।

स्वकीयदेशम् ..... अपि अगच्छत्।

अनुवाद—अपने देश में आकर जवाहरलाल का मन विदेशियों की सेवा करने में न लग सका। देश की सेवा करने लग गए। उनकी पत्नी कमलादेवी भी देश सेवा में लग गईं। गांधी महोदय के द्वारा चलाए गए सत्याग्रह में जवाहरलाल सम्मिलित हुए। वे भारत के गाँव-गाँव, नगर-नगर में गए और लोगों को स्वतंत्रता के लिए प्रोत्साहित किया। वे अनेक बार जेल भी गए।

अन्ते एतादृशानां ..... समर्पिता आसीत्।

अनुवाद—अन्त में इस प्रकार के महापुरुषों द्वारा किया गया प्रयत्न सफल हुआ। 1947 ई० वर्ष में 15 अगस्त के दिन भारत आजाद हुआ। पं० जवाहरलाल देश के प्रथम प्रधानमंत्री हुए। वे लोकप्रिय नेता थे। लोग उनसे विशेष स्नेह, करते थे। देश की सेवा में उन्होंने अपने प्राण को त्यागा। वे पूरे संसार में शांति के दूत के नाम से जाने जाते हैं। उनकी पुत्री इंदिरा गांधी भी देश की सेवा के लिए समर्पित थीं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) पं० जवाहरलालस्य जन्म 1889 तमे ख्रीष्टाब्दे नवंबर मासस्य चतुर्दश दिनांकेऽ भवत्।

(ख) जवाहरलालस्य पितुर्नाम मोतीलाल नेहरूः आसीत्।

(ग) जवाहरलालः 'बैरिस्टर' इत्युपाधिं प्राप्नोत्।

(घ) जवाहरलालस्य पत्न्याः नाम कमलादेवी आसीत्।

(ङ) 1947 तमे वर्षे अगस्त-मासस्य पंचदश दिनांके भारतवर्ष: स्वतन्त्रतोऽभवत्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) अस्माकं देशे बहव: **महापुरुषाः** अभवन्।
(ख) राष्ट्रभक्तेषु पं० नेहारोर्नाम **अग्रगण्यः** अस्ति।
(ग) तस्य पितुर्नाम **पं० मोतीलाल नेहरूः** आसीत्।
(घ) स: भारतस्य प्रसिद्ध: **वाक्कीलः** आसीत्।
(ङ) स: देशस्य सेवायां **प्राणान्** अत्यजत्।
(च) स: अनेकवारं कारागारम् अपि **अगच्छत्।**

3. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) अपने देश आकर जवाहरलाल नेहरू का मन अंग्रेजों की सेवा में नहीं लगा।
(ख) वे देश की सेवा में लग गए।
(ग) जवाहरलाल उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए ब्रिटेन गए।
(घ) वह भारत के गाँव-गाँव नगर-नगर में गए।
(ङ) नेहरू जी सम्पूर्ण विश्व में शांतिदूत नाम से जाने जाते हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) राष्ट्रभक्तेषु पं० जवाहरलाल नेहरो: नाम अग्रगण्य: अस्ति।
(ख) तस्य पितुर्नाम पं० मोतीलाल नेहरू: आसीत्।
(ग) जवाहरलाल नेहरो:लालनं-पालनं विशेषपूर्वकम् अभवत्।
(घ) उच्चशिक्षायै पं० नेहरू: आंगले देशम् अगच्छत्
(ङ) पं० नेहरू: विश्वे शांतिदूत नाम्ना ज्ञायते।
(च) नेहरू महोदयस्य पुत्री नाम श्रीमती इन्दिरा गांधी आसीत्।
(छ) सा महती देशभक्ता आसीत्।

5. सही वाक्य के सामने (✓) और गलत वाक्य के सामने (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✗, (ङ) ✓, (च) ✓, (छ) ✓, (ज) ✓

6. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

विद्वांसश्च = **विद्वांसः + च**
नेहरोर्नाम = **नेहरोः + नाम**
पितुर्नाम = **पितुः + नाम**
स्वतन्त्रोऽभवत् = **स्वतन्त्रः + अभवत्**
सफलोऽभवत् = **सफलः + अभवत्**
इत्युपाधिम् = **इति + उपाधिम्**

7. सविग्रह समास का नाम लिखिए—

राष्ट्रभक्त: = **राष्ट्रस्य भक्तः** **तत्पुरुष समासः**
प्रधानमंत्री = **प्रधानस्य मन्त्री** **तत्पुरुष समासः**
लोकप्रिय: = **लोकानाम् मन्त्री** **तत्पुरुष समासः**
विधिशास्त्रम्= **विधेः शास्त्रम्** **तत्पुरुष समासः**
समाजसुधारक: = **समाजस्य सुधारकः** **तत्पुरुषः समास**

त्रयोदशः पाठः

कालिदासः

हिंदी अनुवाद

को न ..... कविः आसीत्।

अनुवाद—महाकवि कालिदास को कौन नहीं जानता अर्थात् सभी जानते हैं। अपने नाम को धन्य करने वाले कवि कुलगुरु कालिदास न केवल भारत के अपितु विश्व के श्रेष्ठ कवि हैं।

इस कवि के जन्म के विषय में बहुत कम ही सूचना प्राप्त होती हैं। ये सम्राट विक्रमादित्य के नौ (9) रत्नों में से एक थे। वे राजा से प्राप्त आश्रय कवि थे।

कालिदासस्य ..... एका रचना अस्ति।

अनुवाद—कालिदास के विषय में जनश्रुति है कि पहले कालिदास महामूर्ख थे। लोगों ने उनका विवाह विदुषी कन्या विद्योत्तमा के साथ करवा दिया। पत्नी की प्रताड़ना के कारण वे घर से निकल गए। देवी के प्रसाद से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया और पुन: घर को आए। आकर 'अस्ति कश्चित् वाग् विशेष:' (यह किसकी वाणी विशेष है) इस प्रकार पत्नी के मुख से सुनकर वाक्य के एक-एक पद को लेकर तीन काव्यों की रचना की। कुमारसम्भवम्, मेघदूतम् और रघुवंशम् ये तीन काव्य है। अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम् और मालविकाग्निमित्रम् ये तीन नाटक हैं। इनके अतिरिक्त ऋतु संहार भी इनकी एक रचना है।

कालिदासः ..... गौरवम् अनुभवन्ति।

अनुवाद—कालिदास ने सरल भाषा में प्रसाद रीति से काव्यों की रचना की। कालिदास का प्रकृति वर्णन अद्भुत है उनकी रचना में प्रकृति का मानवीकरण विशेष रूप से दिखाई देता है। उपमालंकार के प्रयोग में तो वे अद्वितीय

कवि हैं। इसी से कुछ गया है 'उपमा कालिदास्य'
इस प्रकार लोगों के प्रिय कवि कालिदास के विषय में सभी भारतीय गौरव का अनुभव करते हैं।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) कविकुलगुरु: नाम्ना कालिदास: प्रसिद्ध: अस्ति।
(ख) महाकवि: कालिदास: विक्रमादित्यस्य नृपस्य रत्नम् आसीत्।
(ग) कालिदासस्य विषये जनश्रुति: अस्ति यत् पूर्वं कालिदास: महामूर्ख: आसीत्।
(घ) कालिदासस्य विवाह: विद्योत्तमा सह अभवत्।
(ङ) कालिदासस्य त्रीणि काव्यानि सन्ति-घुवंशम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्।
(च) महाकवे: रचितानि नाटकानि अभिज्ञानशार पुतलम् विक्रमोर्व शीयम्: मालविकाग्निामम् च सन्ति।
(छ) उपमालंकारस्य प्रयोगे महाकवि: कालिदास: अद्वितीय: अस्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) को न जानाति **महाकविं** कालिदासम्।
(ख) पूर्वं कालिदास: **महामूर्ख:** आसीत्।
(ग) पत्न्या: **प्रताडना कारणात्** स: गृहात् **निर्गत:**।
(घ) एतदतिरिच्य **ऋतुसंहारमपि** एका रचना अस्ति।
(ङ) तस्मात् कथितम् '**उपमा कालिदासस्य**'।

3. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए—

शब्द:	**विभक्ति:**	**वचनम्**
महाकवे:	**षष्ठी**	**एकवचनम्**
मुखात्	**पञ्चमी**	**एकवचनम्**
प्रकृते:	**षष्ठी**	**एकवचनम्**
विद्योत्तमया	**तृतीया**	**एकवचनम्**
पत्न्या:	**षष्ठी**	**एकवचनम्**

4. निम्नलिखित शब्दों के भविष्यत् काल के रूप लिखिए—

अस्ति = **भविष्यति**
मिलति = **मिलिष्यति**
गच्छति = **गमिष्यति**
करोति = **करिष्यति**
रचयति = **रचयिष्यति**

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) कालिदासस्य नाम विश्वे प्रसिद्ध: अस्ति।
(ख) कालिदास त्रीणि महाकाव्यानि रचनां करोति स्म।
(ग) आरम्भे कालिदास: महामूखणि: मन्यतेस्म।
(घ) कालिदास: कविकुलगुरु: कथ्यते।
(ङ) कालिदास: सम्राट् विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु एक: आसीत्।

6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(क) को न जानति महाकविं कालिदासम्।
(ख) एष: महाकवि: राजा विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु आसीत्।
(ग) पूर्वं कालिदास: मूर्ख: आसीत्।
(घ) कालिदासस्य प्रकृति-वर्णनम् अद्भुतम् अस्ति।
(ङ) कालिदासस्य विषये भारतीया: गौरवम् अनुभवन्ति।

7. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(क) श्रेष्ठ: = कालिदास: विश्वस्य **श्रेष्ठ:** कवि: अस्ति।
(ख) स्वल्पा = अस्य महाकवे: जन्मादिवषिये **स्वल्पा** एव सूचना लभते।
(ग) महामूर्ख: = पूर्वं कालिदास: **महामूर्ख:** आसीत्।
(घ) अद्वितीय: = उपमा-अलंकारस्य प्रयोगे तु स: **अद्वितीय:** कवि: अस्ति।

चतुर्दशः पाठः

सुभाषितानि

हिंदी अनुवाद

आयुष: ..... समुहानहो।

अनुवाद—आयुका एक क्षण भी बहुत सारे रत्नों से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वह व्यक्ति बेकार हैं जो अपने मन को अथवा अपने आपको आलस्य में डुबोए रखता हैं अर्थात् हर कार्य में आलस्य करता है।

पुस्तकस्था ..... तद्धनम्।

अनुवाद—पुस्तक में विद्यमान विद्या और दूसरे के हाथ में गया धन, धन नहीं है क्योंकि इस प्रकार की विद्या तथा धन कार्य के उत्पन्न होने पर निरर्थक हैं। जो समय पर साथ नहीं देता है। उनका कोई लाभ नहीं।

दुर्जनेन ..... करम्।

अनुवाद—दुर्जन के साथ मित्रता और प्रीति नहीं करनी चाहिए क्योंकि गर्म अंगारा हाथों को जलाता है और ठंडा पड़ने पर हाथों को काला करता है।

उत्साहो ..... दुर्भभम्।

अनुवाद— हे श्रेष्ठा उत्साह बलवान है। उत्साह से बढ़कर कोई बल नहीं हैं और उत्साही के लिए लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है अर्थात् सभी वस्तुएँ प्राप्य है।

बहुभिर्न ..... पिपीलिकाः।

अनुवाद—सज्जनों और दुर्जनों का स्वभाव बहुत भिन्न होता है अर्थात् विरोधीं होता है। क्या फुँफकारते हुए सर्प को चीटियाँ नहीं खाती अर्थात् खाती है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) यः प्रमादी भवति सः प्रमादं करोति।

(ख) कार्यकाले परहस्तगतं धनं धनं न भवति।

(ग) सोत्साहस्य लोकेषु न किञ्चदपि दुर्लभम् अस्ति।

(घ) दुर्जनैः समं प्रीतिं न कारयेत्।

(ङ) शीतलोऽपि अङ्गारः कृष्णायते करम्।

2. रंगीन शब्दों को आधार मानकर प्रश्न बनाइए—

(क) परहस्गतं धनं कहा न मिलति?

(ख) काः नागेन्द्रं भक्षयन्ति?

(ग) कस्मात् परंबलं न अस्ति।?

(घ) केन समयः वृधा नीयते?

(ङ) दुर्जनेन समं किं न कारोत्?

3. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) पुस्तकस्था विद्या कार्यकाले छात्रं सफल **न** करोति।

(ख) आयुषः एकः **अपि** क्षणः रत्नैः न लभ्यते।

(ग) विद्यार्थिनां तपः **विद्यालयाः** अध्ययनम् एव भवति।

(घ) बहुभिः सज्जनैः दुर्जनैः **बहुभिः** विरोधं न कुर्यात्।

(ङ) यः समयेन कार्यं न करोति सः समयं वृथा नयति।

4. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) **पुस्तकस्था** विद्या एव विद्या भवति।

(ख) **उत्साहिनां** कृते लोकेषु किञ्चिदपि दुर्लभं नास्ति।

(ग) **सद्भिः** समं प्रीतिं कारयेत्।

(घ) **स्वहस्तगतं** धनम् एव धनं भवति।

(ङ) अङ्गारः **उष्णः** एव दहति।

5. निम्नलिखित शब्दों में से क्रियापद और कर्तृपद चुनकर अलग-अलग लिखिए—

क्रियापदानि	**कर्तृपदानि**
लभ्यते	विद्या
भक्षयन्ति	अङ्गारः
अस्ति	सज्जनः
नीयते	दुर्जनः
दहति	धनम्
कृष्णायते	पिपीलिकाः
अस्ति	कारमेत्

6. तृतीय व चतुर्थ श्लोक का भावार्थ अपनी भाषा में लिखिए—

(क) दुर्जनेन ..... करम्।

अनुवाद—दुर्जन के साथ मित्रता और प्रीति नहीं करनी चाहिए क्योंकि गर्म अंगारा हाथों को जलाता हैं और ठंडा पड़ने पर हाथों को काला करता है।

(ख) उत्साहो ..... दुर्लभम्।

अनुवाद— श्रेष्ठा उत्साह बलवान है। उत्साह से बढ़कर बल नहीं हैं और उत्साही के लिए लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है अर्थात् सभी वस्तुएँ प्राप्य है।

7. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(क) उत्साहः— **उत्साहो** बलवानार्य नास्तयुसाहात्परं बलम्।

(ख) प्रीतिः— दुर्जनेन समं सख्यं **प्रीतिं** चापिन कारयेत्।

(ग) उष्णः— **उष्णो** दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्।

(घ) प्रमादः— नीयते स वृथा येन **प्रमादः** सुमहानहो।

(ङ) विद्या — पुस्तकस्था तु या **विद्या** परहस्तगतं धनम्।

हिंदी अनुवाद

शिक्षकःभो छात्राः! ..... प्रसिद्धम्।

अनुवाद—

शिक्षक : अरे छात्रो! आज कक्षा में सामान्यज्ञान प्रतियोगिता है।

छात्र : अच्छा महोदय! हम सभी तैयार हैं।

शिक्षक : मैं जिस छात्र को लक्ष्य करके प्रश्न पूछूँगा वही उत्तर दे। देव! तुम बोलो। संस्कृत-दिवस कब मनाते हैं?

देव : श्रावणमास की पूर्णिमा को। उस दिन रक्षाबंधन का उत्सन भी होता है।

शिक्षक : अच्छा। रमा! तुम बोलो। महाभारत के लेखक कौन हैं?

रमा : महर्षि वेदव्यास। श्रीमदभगवदगीता भी महाभारत का ही अंश है।

शिक्षक : बहुत अच्छा अरे विपुल! तुम बोलो, संस्कृत का प्रसिद्ध नाटक क्या है?

विपुल : अभिज्ञानशाकुन्तलम्। और महाकवि कालिदास इसके लेखक हैं।

शिक्षक : सुंदर अरे विधि! कालिदास की तुलना किस पाश्चात्य कवि के साथ होती हैं?

विधि : कालिदास की तुलना अंग्रेजी के कवि शेक्सपीयर के साथ होती है।

शिक्षक : बहुत अच्छा उत्तर! अरे मधुर! शेक्सपीयर कवि का कौन-सा नाटक प्रसिद्ध है?

मधुर : जूलियस सीजर।

शिक्षकः साधु ..... धन्यवाद श्रीमन्!

अनुवाद—

शिक्षक : अच्छा! अरे कृति! हिन्दी भाषा के मुख्य कवि कौन हैं?

कृति : कबीरदास, तुलसीदास जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत और रामधारीसिंह दिनकर।

शिक्षक : ठीक बोलते हो ये प्रमुख कवि हैं। सरला जयशंकर प्रसाद की मुख्य रचना कौन-सी है?

सरला : 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद की मुख्य रचना है।

शिक्षक : ठीक अब कालांश पूर्ण हुआ। (अब समय पूरा हुआ)

छात्र : धन्यवाद श्रीमान।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) अद्य कक्षायां सामान्यज्ञान-प्रतियोगिता अस्ति।
(ख) महाभारतस्य लेखकः व्यासः अस्ति।
(ग) श्रावणमासे पूर्णिमायां संस्कृति दिवसः रक्षाबन्धनोत्सवः च मान्यते।
(घ) श्रावणमासे पूर्णिमायां संस्कृत-दिवसः मान्यते।
(ङ) 'कामायनी' जयशङ्कर प्रसादस्य रचना अस्ति।
(च) संस्कृत-साहित्ये सुप्रसिद्धः नाटककारः कालिदासः अस्ति।

2. रंगीन शब्दों को आधार मानकर प्रश्न बनाइए—

(क) अध कक्षायां कस्य प्रतियोगिता अस्ति?
(ख) कः महाभारतस्य एव अंशः अस्ति?
(ग) कस्य सुप्रसिद्ध नाटकम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् अस्ति?
(घ) कविः तुलसीदासः किम् अलिखत्?
(ङ) कस्य उत्सवः पूर्णिमायां भवति?

3. निम्नलिखित शब्दों में आए अलग शब्द पर गोला बनाइए—

(क) तस्य कस्य **मम** किम्
(ख) लेखकः कविः **कालिदासः** ग्रन्थकारः
(ग) अद्य अधुना इदानीम् **एषः**
(घ) सम्यक उचितम **धन्यवादः** साधुः
(ङ) यच्छतु **पठिष्यति** कुरुत लिखत

4. मंजूषा (बॉक्स) में से सही पद चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) कालिदासस्य **त्रीणि** नाटकानि सन्ति।
(ख) रामायणे महाकाव्ये **सप्त** काण्डानि सन्ति।
(ग) कविभासस्य **त्रयोदश** नाटकानि सन्ति।
(घ) वेदाः **चत्वारः** एव सन्ति।
(ङ) प्रमुखाः उपनिषदः **अष्टादश** सन्ति।

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) लक्ष्यः = **निश्चित चिह्न अथवा वस्तु को आधार मानना।**
यः परिश्रमेण कार्माणि करोति सः एव लक्ष्यं प्राप्तनेति।

(ख) अंशः = **भाग**
श्रीमदभगवद्गीता महाभारतस्य एव अंशः **अस्ति।**

(ग) शोभनम् = **अच्छा**
अतीव शोभनम्। तब मनः अर्कषति।

(घ) सम्यक = **अच्छा**
अधुना मया सम्यक् अवगतम्।

(ङ) समृद्धिः = **उन्नति**
जनः विद्याभ्यासयोगेन परिश्रमेणना सुख स्मृद्धिः प्राटनोति।

(च) विशालः = **बड़ा (विस्तृत)**
संस्कृत-साहित्यः अति विशालः अस्ति।

6. वाक्यों में आई क्रिया को लङ्-लकार में बदलिए—

(क) हरप्पासभ्यता प्राचीनतमा आसीत्।

(ख) कविः आदिकाव्यं रामायणम् अरचयत्।

(ग) आचार्यः चाणक्यः अर्थशास्त्रम् अरचयत्।

(घ) श्रीकृष्णः युद्धक्षेत्रे अर्जुनम् उपदिशत्।

(ङ) कृष्णदेवरायस्य विदूषकः तेनालीरामः पुरस्कारम् अविन्दत्।

7. सही उत्तर पर (✓) लगाइए—

(क) अष्ठाध्यायी, (ख) महर्षिः वेदव्यासः, (ग) शिकागो नगरे, (घ) अष्टादश, (ङ) देवनागरी

8. शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए—

रक्षाबन्धनोत्सवः = **रक्षाबन्धन + उत्सवः**

महाकविः = **महा + कविः**

कालांशः = **काल + अंशः**

श्रावणमासः = **श्रावण + मासः**

स्वाध्यायः = **स्व + अध्यायः**

अध्यादेशः = **अधि + आदेशः**

वसन्तोत्सवः = **वसन्त + उत्सवः**

षोडशः पाठः

दिनचर्या

हिंदी अनुवाद

विभा-नेहा! त्वं ..... वाटिकां गच्छामि।

अनुवाद—

विभा : नेहा! तुम कब जागती (उठती) हो?

नेहा : मैं चार बजे जागती (उठती) हूँ।

विभा : मुझे भी जगा (उठा) देना। मैं देर से सोती हूँ।

नेहा : तुम कब व्यायाम और अध्ययन करती हो।

विभा : मैं व्यायाम नहीं करती हूँ। साढ़े छः बजे से नौ बजे तक अध्ययन करती हूँ।

नेहा : यह अच्छा नहीं है। शरीर और मन के लिए व्यायाम अति आवश्यक है। प्रतिदिन करना ही चाहिए।

विभा : अच्छा कल से शुरू करूँगी। तुम्हारी कक्षा कब तक चलती है?

नेहा : मेरी कक्षा सवा चार बजे तक चलती है। उसके पश्चात मैं छात्रावास में आ जाती हूँ। पाँच बजे फिर वाटिका (उद्यान) में घूमने के लिए जाती हूँ।

विभा-अहं ..... प्रयत्नं करिष्यामि।

अनुवाद—

विभा : मैं विद्यालय से आकर लिखने का काम करती हूँ। पौने छः बजे टी० वी० (दूरदर्शन) पर धारावाहिक देखती हूँ।

नेहा : मेरी दूरदर्शन में रुचि नहीं है। अतः मैं (रात) रात्रि में आठ बजे से नौ बजे तक पढ़ती हूँ। फिर भोजन करके सो जाती हूँ।

विभा : क्यों इतनी जल्दी सोती हो?

नेहा : जल्दी सोना जल्दी उठना और दिनचर्या का पालन करना ही स्वास्थ्य का रहस्य है।

विभा : अच्छा, मैं भी वैसे प्रयत्न करूँगी।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) नेहा चतुर्वा जागरणं करोति।

(ख) विभा साधषङ्वादनतः नववादनपर्यन्तम् अध्ययनं करोति।

(ग) विभा पादानेषङ्वादने दूरदर्शनं पश्यति।

(घ) नेहा रात्रौ अष्टवादनात् नववादन पर्यन्तं पठति।

(ङ) सम्यक् दिनचर्यापालनम् उत्तम-स्वास्थ्यस्य रहस्यम् अस्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) अहं चतुर्वादने **जागरणं** करोमि।

(ख) शरीरस्य **मनसः** च कृते **व्यायामः** परमावश्यकः।

(ग) पञ्चवादने पुनः **भ्रमणार्थं** वाटिकां गच्छामि।

(घ) मम दूरदर्शने **रुचिः** नास्ति।

(ङ) अहमपि **तदवत्** प्रयत्नं करिष्यामि।

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) माम् = **मुझे/मुझको**
माम् **अपि जागरयतु।**

(ख) समीचीनम् = **ठीक/अच्छा**
एतद् कार्यं समीचीनं **नास्ति।**

(ग) मनसः = **मन का**
शरीरस्य मनसः **च कृते व्यायामः परमावश्यकः।**

(घ) सम्यक् = **अच्छा**
सम्यक, अहमपि तदवत् प्रयत्नं करिष्यामि।

(ङ) श्वः = **आने वाला कल**
अहं श्वः देहली प्रंति गामिष्यमि।

(च) आरभ्य = **प्रारंभ करके**
अहंश्वः कार्यम् आरभ्य परश्वः पर्यन्तं करिष्यामि।

(छ) रात्रौ = **रात में**
अहं रात्रौ अष्टवादनात् नववादन पर्यन्तं पठामि।

4. निम्नलिखित शब्दों को भविष्यत् काल में लिखिए—

करोति = **करिष्यति**
गच्छति = **गमिष्यति**
नयति = **नेष्यति**
लिखति = **लिखिष्यति**
जानाति = **ज्ञाष्यति**
स्मरति = **स्मरिष्यति**
ददाति = **दास्यति**

5. निम्नलिखित समय को संस्कृत में लिखिए—

ग्यारह बजे = **एकादशवादने**
सवा पाँच बजे = **सपाद पञ्च वादने**
दो बजे = **द्वयवादने**
सवा आठ बजे = **सपादष्टवादने**
साढ़े तीन बजे = **सार्धत्रयवादने**
सवा चार बजे = **सवादचतुर्वादने**
साढ़े दस बजे = **सार्धदशवादने**
पोने सात बजे = **पादोन सप्तवादने**

6. निम्नलिखित वाक्यों को संस्कृत में लिखिए—

(क) त्वं कदा जागरणं करोषि।

(ख) अहं सदैव पञ्चवादने जागरणं करोमि।

(ग) अहं रात्रौ दशवादने पर्यन्तं पठामि।

(घ) अहमपि श्वः उषाकाले प्रतिदिनं भ्रणार्थं गच्छामि।

सप्तदशः पाठः

आदिकविः वाल्मीकिः

हिंदी अनुवाद

पुरा वाल्मीकि ..... काममोहितम्।

अनुवाद—प्राचीन काल में वाल्मीकि नाम के एक ऋषि थे। एक बार वे अपने शिष्यों के साथ तमसा नदी के तट पर स्नान करने के लिए गए। मार्ग में उन्होंने शिकारी के द्वारा घायल किया हुआ एक क्रौञ्च पक्षी देखा। साथी के वियोग में दुखी क्रौञ्ची के उच्च विलाप और क्रन्दन को उन्होंने सुना। ऐसा सुनकर उसकी दयनीय दशा को देखकर दयावान ऋषि द्रवित हो उठे (गए)। क्रौञ्ची के क्रन्दन के कारण ऋषि का शोक श्लोक के रूप में उनके मुख से निकल पड़ा।

अयम् एव ..... प्रसिद्धा जाता।

अनुवाद—यही श्लोक लौकिक संस्कृत साहित्य की आदिकाव्य रचना है। तभी से इन ऋषि को कविपद प्राप्त हुआ। ऋषि के कवित्व को जानकर ब्रह्मा ने दिया-है आकाशवाणी से आदेश ऋषि! रामायण काव्य की रचना करो। और वहाँ रामचरित का वर्णन करों, जिसके द्वारा राम के पुण्य चरित्र को जानकर लोग सन्मार्ग का अनुसर करें। ब्रह्मा के आदेश के अनुसार वाल्मीकि ने श्लोकबद्ध रामायण की कथा लिखी। वही वाल्मीकि रामायण नाम से प्रसिद्ध हुई।

अत्र कविना ..... आदिकाव्यं चोच्यते।

अनुवाद—यहाँ कवि ने अनेक प्रकार के तथ्यों को वर्णित किया। जो मानवजीवन में मार्गदर्शन करते हैं। इस काव्य में वाल्मीकि ने पिता द्वारा दी गई आज्ञा का पालन, भ्रातृस्नेह परोपकार दया, दाक्षिण्य, दीनरक्षा आदि मानवता के पोषक अनेक जीवन मूल्यों को वर्णित किया है। ये कवि संस्कृत के आदि कवि कहे जाते हैं और उनकी रचना संस्कृत की आदि रचना कही जाती है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) क्रौञ्च्याः रोदनम् उच्चैः क्रन्दनञ्च श्रुत्वा तस्याः दयनीयां दशां च दृष्ट्वा ऋषिः द्रवितोऽभवत्।

(ख) वाल्मीकिः स्नातुं तमसा नद्याः तीरम् अगच्छत्।

(ग) ब्रह्मणा आकाशवाण्या वाल्मीकिं आदिशत् ऋषे! कुरु रामायणं काव्यम्।

(घ) वाल्मीकिना श्लोकबद्धा रामायणी कथा लिाता।

(ङ) वाल्मीकिः व्याकुलितायाः क्रौञ्च्याः रोदनम् अशृणोत्।

2. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए—

शब्दः	**विभक्तिः**	**वचनम्**
शिष्यैः	**तृतीया**	**बहुवचनम्**
यानि	**प्रथमा**	**बहुवचनम्**
तद्रचना	**प्रथमा**	**एकवचनम्**
नद्याम्	**प्रथमा**	**एकवचनम्**
अयम्	**प्रथमा**	**एकवचनम्**

3. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए—

वियोगेन = **वि** + **योगेन**

उन्मुखः = **उत्** + **मुखः**

आदेशः = **आ** + **देशः**

प्रयोगः = **प्र** + **योगः**

व्याकुलितायाः = **वि** + **आकुलितायाः**

उपागता = **उप** + **आगता**

4. एक शब्द में उत्तर दीजिए—

(क) वाल्मीकिः।

(ख) आसीत्।

(ग) ब्रह्मण।

(घ) शिष्यैः।

5. हिंदी भाषा में अनुवाद कीजिए—

(क) वाल्मीकि एक बार शिष्यों के साथ नदी पर स्नान करने गए।

(ख) दयावान (करुणवान्) ऋषि द्रवित (करुण) हो गए।

(ग) वाल्मीकि ने रामायण की कथा लिखी।

(घ) ये कवि आदिकवि के नाम से पुकारे जाते हैं।

(ङ) ब्रह्मा ने आकाशवाणी से ऋषि को आदेश दिया।

6. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(क) तीरम् = वाल्मीकिः स्नातुं तमसानद्याः **तीरम्** अगच्छत्।

(ख) व्याधेन = मार्गे सः **व्याधेन** बिद्धम् एकं क्रौञ्च पक्षिणम् अपश्यत्।

(ग) कारुणिकः = **कारुणिकः** ऋषिः द्रवितः अभवत्।

(घ) विज्ञाय = ऋषेः कवित्वं **विज्ञाय** ब्रह्मणा आकाशवाण्या आदिशत्।

(ङ) आज्ञापालनम् = लवकुशौ ऋषेः **आज्ञापालनं** कुरुत।

(च) उच्यते = अयं कविः आदिकविः **उच्यते।**

7. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए—

स्नातुम् = **स्नान करने के लिए**

वियोगेन = **वियोग से**

द्रवितः = **पिघलकर (द्रवित होकर) विदित्वा ज्ञात करके**

मानवतायाः = **मनुष्यता का** तद्रचना = **उस प्रकार की रचना**

अष्टादशः पाठः

चन्द्रशेखरः आजादः

हिंदी अनुवाद

वीराणां ..... अर्पितवन्तः।

अनुवाद—वीरों की कभी भी मृत्यु नहीं होती है। समाज और राष्ट्र के लिए अपना जीवन अर्पित करके वे अमर हो जाते हैं। चन्द्रशेखर आजाद उन्हीं महान वीरों में से एक थे। हम उन्हें आदर और गौरव के साथ याद करते हैं। वे भारत के स्वतंत्रता-आंदोलन के महान वीर थे। स्वतन्त्रता-आंदोलन में एक ओर महात्मा गांधी की तरह अहिंसा के अनुयायी थे तो दूसरी और क्रांतिकारी थे जिन्होंने मातृभूमि

के लिए अपने खून को बहाया।

चन्द्रशेखरस्य ..... 'आजादः'।

अनुवाद—चन्द्रशेखर का जन्म काशी में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री सीताराम तिवारी और माता का नाम जगरानी देवी था। वे बचपन से ही तीक्ष्ण (प्रखर) बुद्धि वाले थे। वे संस्कृत के विद्यार्थी थे। जब वे चौदह वर्ष के थे तभी स्वतंत्रता-आंदोलन में कूद पड़े। जेल में बंदी होने पर भी उन्होंने 'महात्मा गांधी की जय हो' इस प्रकार का उदघोष किया। इससे सष्ट (इससे स्पष्ट नाराज) होकर अंग्रेज अधिकारियों ने उन्हें निर्दयता से मारा। वे मूर्च्छित (बेहोश) हो गए। न्यायालयों में न्यायाधीश ने उनसे पूछा ''तुम्हार क्या नाम है? उन्होंने गर्व 'आजाद'से कहा-

रामप्रसाद बिस्मिलः ..... एव सः अमरः अभवत्।

अनुवाद—रामप्रसाद बिस्मिल, बटुकेश्वरदत्त और भगतसिंह अनेक सहयोगी थे। उन्होंने संसद-भवन में विस्फोट किया। क्रोधित अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने का बहुत प्रयत्न किया परंतु वे उनके हाथ नहीं आए।

एक बार वे इलाहाबाद के अल्फ्रेड नमाक बाग में थे। तब एक सहयोगी के द्वारा दी गई सूचना और विश्वासघात के कारण अंग्रेज सैनिक वहाँ आए। उन्होंने उनके साथ युद्ध कर अनेक अंग्रेज सैनिकों को मारा। जब उनके पास में एक ही गोली शेष बची तब उन्होंने कहा- अंग्रेज सैनिकों के पास में वह पिस्टौल नहीं है जो आजाद को मार सके। ऐसा कहकर बची हुई गोली से उन्होंने अपना जीवन समाप्त कर लिया। इस प्रकार से बंधनरहित होकर ही वे अमर हुए।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वीराणां मृत्युः न भवति।

(ख) स्वतन्त्रता-आन्दोलनस्य महान वीरः आजादः (चंद्रशेखरः आजादः) आसीत्।

(ग) चन्द्रशेखरस्य जन्म काश्याम् अभवत्।

(घ) चन्द्रशेखरः संसदभवने बम्बविस्फोटम् अकारयत्।

(ङ) आंग्लसैनिकानां पार्श्वे तत् पिटकं नास्ति यः आजादं घातयेत्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) वीराणां **कदापि** मृत्युः न भवति।

(ख) स्वतन्त्रता-आन्दोलने **एकतः** महात्मागान्धि-सदृशाः अहिंसानुयायिनः आसन्।

(ग) **यदा** सः चतुर्दशवर्षीयः **एव** आसीत् **तदा एव** स्वतन्त्रता-आन्दोलने अकूर्दत्।

(घ) **एकदा** सः इलाहाबाद-नगरस्य 'अल्फ्रेड' नामके उद्याने आसीत्।

(ङ) **अपरतः** क्रांतिकारिणः आसन्, ये मातृभूम्यै **स्वरक्तम्** अर्पितवन्तः।

(च) आंग्लाधिकारिणः तं **भृशम्** अताडयन्।

3. रंगीन पदों को आधार मानकर प्रश्न बनाइए—

(क) कस्मै स्वजीवनम् अर्पयित्वा वीराः अमराः भवन्ति?

(ख) कस्य जन्म काश्याम् अभवत्?

(ग) क्रान्तिकारिणः कस्यै स्वरक्तम् अर्पितवन्तः?

(घ) तस्य पितुः नाम किम् आसीत्?

(ङ) कुत्र न्यायाधीशः चन्द्रशेखरम् अपृच्छत्?

4. उदाहरणानुसार कोष्ठक में लिखे शब्दों में चतुर्थ विभक्ति का प्रयोग करके वाक्य पूरे कीजिए—

(क) सैनिकाः **देशरक्षायै** स्वप्राणान् अपर्यन्ति।

(ख) **सैनिकायः** नमः।

(ग) वीरः **समाजाय** स्वजीवनम् अर्पयति।

(घ) मम माता **भिक्षुकाय** भोजनं ददाति।

(ङ) कान्तिकारिणः **मातृभूम्यै** स्वरक्तम् अर्पितवन्तः।

(च) सज्जनानां जीवनं **परोपकाराय** भवति।

5. कोष्ठक में दिए शब्दों से वाक्य पूरे कीजिए—

(क) चन्द्रशेखरः बाल्यकालात् एव **प्रखरबुद्धिः** आसीत्।

(ख) स्वतन्त्रता-आन्दोलने क्रान्तिकारिणः स्वरक्तम् **अर्पितवन्तः**।

(ग) 'अल्फ्रेड' नामके उद्याने आजादः स्वजीवनं **समाप्तम्** अकरोत्।

(घ) रुष्टाः आंग्लाधिकारिणः तंम् भृशम् **अताडयन्।**

(ङ) वयं चन्द्रशेखरम् आदरेण **स्मरामः।**

6. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए—

(क) **वीरस्य** कदापि मृत्युः न भवति।

(ख) ते मूर्च्छिताः अभवन्।

(ग) आंग्लसैनिकः तत्र आगच्छत्।

(घ) इमे बालकाः वीराः सन्ति।

(ङ) रुष्टः आंग्लाधिकारि तम् अताडयत।

(च) वीराः अमराः अभवन्।

(छ) सः एकं सैनिकं हतवान्।

हिंदी अनुवाद

शरीरम् ..... प्रचलितम् अस्ति।

अनुवाद—शरीर अन्नमय कोश कहा है। चना, चावल, गेहूँ, दाल, जौ, मूँगदाल, उड़द आदि अन्न हैं। कद्दू, ककड़ी, आलू, घिया आम गन्ना आदि सब्जियाँ और फल है। मक्खन, दुध, मट्, घी आदि पेय पदार्थ हैं। ये सब शाकाहारी मनुष्य का भोजन हैं। मांसाहार मनुष्यों के लिए अच्छा भोजन नहीं है यह आरोग्य शास्त्र का मत है। अत: शाकाहार ही मनुष्य के लिए नीरोगी भोजन है। भोजनशास्त्र के निष्कर्ष के रूप में कहा गया है, शाकाहारी मनुष्य की दीर्घ आयु होती है। मांसाहारियों का जीवन कम होता है। बच्चे मिठाइयाँ खुश होकर खाते हैं। चावल, दाल तथा सब प्रकार का भोजन भारत में विशेष रूप से उत्तर भारत में अधिक प्रचलित है।

भारतस्य ..... स्फूर्तिं यच्छन्ति।

अनुवाद—भारत के पश्चिमी भाग में रोटी तथा मांसाहार अधिक प्रचलित है। दक्षिण भारत में चावल, दही आदि अधिक खाया जाता हैं। ग्रामीण क्षेत्र में हलवा, मालपूआ, सत्तू, खीर चिउड़ा, शक्कर (मीठा), भूना हुआ, गाजर, मूली, प्याज, लहसुन, मिर्च, खीर, पका हुआ। अन्न, गेहूँ का अट्टा, लड्डू, चना आदि प्रयोग ले जाए जाते हैं। नगरीय क्षेत्रों में भोजन अलग होता है। यहाँ सुबह और शाम के समय चाय का व्यापक मात्रा में सेवन होता है। सूखे फलों और ताजे फलों का सेवन प्रचलन भी अधिक है। बहुत-से लोग रोटी खाते हैं। यहाँ मिठाई भी खरीदते हैं।

मद्यपान (शराब को पीना) नगर का अभिशाप है। मद्यपान शरीर को नष्ट करता है। बालकों के लिए दूध को अमृत कहा जाता है। घी बल को बढ़ाने वाला है। शहद खून को साफ करने वाला कहा जाता हैं।

श्रीफल, अमरूद, आँवला स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं। पेट को साफ करते हैं, स्फूर्ति देते हैं।

अतः इमानि ..... साधयिष्यामः।

अनुवाद—अत: इन फलों को अवश्य खाना चाहिए। दूध, घी, शहद, मट्ठा आदि तो अवश्य पीना चाहिए। स्वस्थ नीरोग शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। आरोग्य युक्त मस्तिष्क में अच्छी बुद्धि और अच्छे विचार आते हैं। वेदों में ऋषि सदैव ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि सुबुद्धि दो शेष सब कुछ हम सब स्वयेमेव सिद्ध कर लेंगे।

कृष्णायुजर्वेदे ..... पालनीनयम्।

अनुवाद—कृष्ण युजर्वेद में मंत्र है-हे इन्द्र तुम मुझे बुद्धिवान करो। बुद्धि की सहायता से मैं सब कुछ प्राप्त कर लूँगा।

अर्थात् हे इन्द्र तुम मुझे बुद्धिमान करो। मेधा की सहायता से (धन, धान्यादि, रूप, जय आदि सभी प्रकार के सुख) मैं प्राप्त करबे में समर्थ हो जाऊँगा। अत: मेरी बुद्धि को बढ़ाओ। मुझे सब प्रकार की बुद्धि दो। और समस्त कुशाग्रता दो। यही प्रार्थना है और शरीर आदि तो धर्म के साधन कहे जाते हैं। धर्म-अर्थ, काम, मोक्ष नीरोग होने के लिए उत्तम जड़ है। और रोग के समान शत्रु नहीं है।

रात में दही मत खाओ। निश्चित हो इसमूल व्यधियाँ हैं, व्यधि (बीमारी) की मित्र औषध (दवाई) है और शास्त्रों में विद्वानों ने कहा हैं- अच्छा खाओ, कम खाओ, ऋतु अनूकूल खाओ-भोजन शास्त्र का यद्यशोध आजीवन पालना चाहिए।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) शरीर: अन्नमय: कोश: कथ्यते यतोद्दि चणक: तण्डुलं, गोधूम: द्विदलं यव मुदग: माष: इत्यादि अन्नम् अस्ति।

(ख) भारतस्य मुख्यं भोजनम् ओदनं: इदलं तथा सर्वविध व्यञ्जनं भारते प्रचलित: अस्ति।

(ग) रसमूला हि व्याधय: व्याधिस्तस्य औषधं मित्रं शरीरं व्याधि मन्दिरं शरीरे कथ्यते।

(घ) मांसाहार: मानवानां कृते सुभोजनं नास्ति। यतोदि मासाहारिण: जीवनम् अल्पतरम्।

(ङ) बुद्धि: इति शब्दस्य पर्याय नामानि-मेधा, प्रतिभा मस्तिष्क: आदि सन्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) दक्षिणे भारते भक्तं तक्रादिकं **अधिक खाद्यते**।

(ख) मांसाहार: मानवानां सुभोजनं नास्ति इति **आरोग्य शास्त्रमतम्।**

(ग) बहुश: नागरिका: **रोटिका:** खादन्ति।

(घ) शाकाहारी मनुष्य: **दीर्घायु: भवति**।

(ङ) मधु **रक्तशोधकम्** उच्यते।

(च) नवनीतं, दुग्धं, तक्रसार:, घृतम् इत्यादिकं **पेयम् अस्ति।**

3. सही वाक्य के सामने (✓) और गलत वाक्य के

सामने (✗) का निशान लगाइए

(क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✗, (च) ✓, (छ) ✓, (ज), ✓

4. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

उक्तञ्च = **उक्तम् + च**

ग्रामाञ्चले = **ग्रामाः + चले**

नगराञ्चले = **नगरअञ + चले**

अवश्यमेव = **अवश्यम् + एव**

स्वयमेव = **स्वयम् + एव**

शरीरमाद्यम् = **शरीरम् + आद्यम्**

5. पद-परिचय दें—

वेदेषु = **'वेद-पद' का सप्तमी विभक्ति बहुवचन**

नगरस्य = **'नगर पद' का षष्ठी विभक्ति एकवचन**

फलानि = **'फल पद' का द्वितीय विभक्ति बहुवचन**

व्याधयः = **'व्याधि पद' का प्रथमा विभक्ति बहुवचन**

6. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) शरीर को अन्नमय कोश कहा जाता हैं।

(ख) शाकाहारी मानव अधिक आयु वाले होते है।

(ग) बहुत-से लोग रोटी खाते हैं।

(घ) मांसाहारी भोजन मानव के लिए अच्छज्ञ नहीं होता है।

(ङ) बच्चे मिठाइयाँ खुश होकर (प्रसन्नतापूर्वक) खाते हैं।

(च) शहद को खून साफ करने वाला कहा जाता हैं।

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) मांसाहारः मानवाय सुभोजनं नास्ति।

(ख) बालकाः मिष्ठान्नं रुचिपूर्वक खादान्ति।

(ग) व्याधिसमो रिपुः नास्ति।

(घ) उत्तरभारते ओदनः द्विदलं सर्वविधशाकं भोजने प्रचलितम् अस्ति।

(ङ) अस्माभिः फलानि अवश्यमेव खादितव्यानि।

(च) बालानां कृते दुग्धम् अमृतं कथ्यते।

8. चित्रों को देखिए और उनके नीचे उदाहरण के अनुसार संस्कृत में नाम लिखिए

(क) जम्बीरम् (ख) कालिंगम्

(ग) द्राक्षाफलम् (घ) पलाण्डुः

(ङ) एरण्डीर्चीभटम् (च) सेवफलम्

(छ) कदलीफलम् (ज) आम्रफलम्

(झ) अलाबुः

विंशतिः पाठः

उत्तमाः श्लोकाः

हिंदी अनुवाद

शैले-शैले ..... वने-वने॥

अनुवाद—सभी पर्वतों पर माणिक्य (रत्न विशेष) नहीं होता है, प्रत्येक हाथी में मुक्ता (मोती) नहीं होता है, सभी जगह साधु नहीं हेाते और प्रत्येक वन में चन्दन नहीं होता है।

प्रदोषे ..... कुलदीपकः॥

अनुवाद—संध्याकाल का दीपक चंद्रमा होता है, प्रभात (सुबह) का दीपक सूर्य होता है। धर्म तीनों लोकों का दीपक होता है। अच्छा पुत्र कुल का दीपक होता है।

उत्सवे व्यसने ..... स बन्धवः॥

अनुवाद—उत्सव में, विपत्ति में, अकाल में, देश में गृहयुद्ध में, कचहरी में और शमशान में भी जो साथ देता है वही वास्तविक बन्धु है।

स्वगृहे पूज्यते ..... सर्वत्र पूज्यते।

अनुवाद—मूर्ख अपने घर में ही पूजा जाता है। प्रभु (प्रधान) अपने गाँव में ही पूजा जाता है। राजा अपने देश में ही पूजा जाता है परंतु विद्वान को तो सभी जगहों पर पूजा जाता है।

उत्तमे तु ..... मरणान्तकम्।

अनुवाद—क्षण भर के लिए किया गया कोप अच्छा है। अर्थात् ऐसा क्रोध उत्तम है। दो घड़ी (कुछ समय) के लिए लिया गया कोप मध्यम क्रोध है। पूरी रात के लिए किया गया क्रोध अधम कोष है। परंतु चाण्डाहल में तो मरण के बाद भी नही।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) सर्वत्र साधु न मिलति।

(ख) सुपुत्रः कुलस्य दीपकः।

(ग) स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः।

(घ) उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे। राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति सः बान्धवः।

(ङ) स्वदेशे राजा पूज्यते।

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए—

(क) उत्तमे तु **क्षणं** कोपो।

(ख) साधवो नहि **सर्वत्र**।
(ग) प्रभाते दीपक: **रवि:**।
(घ) स्वग्रामे पूज्यते **प्रभु:**।
(ङ) गजे-गजे न **मौक्तिकं**।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) त्रिलोकस्य स्वामी परमात्मा अस्ति।
(ख) स: संसारस्य दीपक: अस्ति।
(ग) सर्वेषु वृक्षेषु फलनि न उद्भविन्त।
(घ) विनयशीला: जना: सर्वत्र पूज्यन्ते।
(ङ) स: तस्य बन्धु: नास्ति।

4. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखिए—

एकवचनम्	**बहुवचनम्**
बन्धु:	**बान्धव:**
प्रभु:	**प्रभव:**
विद्वान्	**विद्वांस:**
रत्नम्	**रत्नान्**
वाटिका	**वाटिका:**

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) प्रभाते = सूर्योदय के समय में
प्रभाते दीपक: रवि: अस्ति।
(ख) त्रैलोक्ये = तीनों लोकों में
त्रैलोक्ये दीपक: धर्म: अस्ति।
(ग) स्वगृहे = अपने घर में
स्वगृहे पूज्यते मूर्ख: अति।
(घ) स्वग्रामे = अपने गाँव में
स्वग्रामे पूज्यते प्रभु: अति।
(ङ) स्वदेशे = अपने देश में
स्वदेशे पूज्यते राजा अस्ति।
(च) चाण्डाले = चाण्डाल द्वारा (में)
चाण्डाले मरणान्त्रतकम् कोपं शान्त जात:।
(छ) उत्तमे = उत्तम में (अच्छा)
उत्तमे तु क्षणं कोप:।
(ज) मध्यमे = मध्य में, बीच में
मध्यमे घटिकादूयम् शान्त: जात: कोपम्।

6. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ लिखिए—

(क) प्रदोषे ..... कुलदीपक:।।
अनुवाद—संध्याकाल का दीपक चंद्रमा होता है, प्रभात (सुबह) का दीपक सूर्य होता है। धर्म तीनों लोकों का दीपक होता है। अच्छा पुत्र कुल का दीपक होता है।
(ख) स्वगृहे पूज्यते ..... सर्वत्र पूज्यते।
अनुवाद—मूर्ख अपने घर में ही पूजा जाता है। प्रभु (प्रधान) अपने गाँव में ही पूजा जाता है। राजा अपने देश में ही पूजा जाता है परंतु विद्वान को तो सभी जगहों पर पूजा जाता है।

7. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

कुलदीपक: = **कुल + दीपक:**
राजद्वारे = **राज + द्वारे**
घटिकाद्वयम् = **घटिका + द्वयम्**
मरणान्तकम् = **मरण + अन्तकम्**

एकविंशतिः पाठः

प्रहेलिकाः

हिंदी अनुवाद

(क) प्रकाश: शीतलं ..... स: क:।।

अनुवाद—जिसका प्रकाश शीतल है और जो कलाओं द्वारा बढ़ता है, जो सभी के कष्ट को हरता है तथा चकोर का प्रिय कौन है?

(ख) अपदो ..... स पण्डित:।।

अनुवाद—जो बिना पाँव के दूर तक जाता है और पढ़ा-लिखा नहीं है फिर भी पंडित विद्वान है, और बिना मुख के स्पष्ट बोलने वाला है, ऐसे को जो जानता है वह पंडित है।

(ग) चक्री त्रिशूली ..... च रामचन्द्र:।।

अनुवाद—जो चक्र और त्रिशूलधारी है किंतु न तो हरि है और न ही शम्भु महान बलवान है किंतु भीमसेन नहीं। स्वच्छन्द विचरण करने वाला है, किंतु न तो वह राजा है, और न ही योगी। सीता वियोगी है किंतु रामचन्द्र नहीं।

(घ) चतुष्पादो ..... हि मानवा:।।

अनुवाद—जो चार पैरों वाला और दो हाथ वाला सदा विश्राम देने वाला है, इस संसार में मानव मेरे लिए ही झगड़ते हैं।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) द्वितीय प्रहेलिकाया: उत्तरमस्ति चन्द्रमा।
(ख) य: अपदो दूरगामी न साक्षर: न स्फुटवक्ता च

तत् पत्रमस्ति।

(ग) शम्भु: त्रिशूली धार्यते।

(घ) रामलक्ष्मणौ सीतावियोगौ स्त:।

(ङ) अन्तिमाया: प्रहेलिकाया: उत्तरमस्ति ध्वज:।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) प्रकाश: शीतलं यस्य **य: कलाभि:** च वर्धते।

(ख) अमुख: **स्फुटवक्ता** च य: जानाति स पण्डित:।

(ग) तस्यादि: न **तस्यान्त:** न तस्य मध्ये य: तिष्ठति।

(घ) स्वच्छन्दचारी **नृपति:** न योगी, सीता वियोगी न च **रामचन्द्र:**।

(ङ) **दन्तैर्हीन:** शिलाभक्षी निर्जीवो **बहुभाषक:**।

3. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए—

(क) रामचन्द्र: = पुरा अयोध्यानगर्या: नृपति: **रामचन्द्र:** आसीत्।

(ख) अपदो = दूरगामी पत्रम् एव तत् वस्तु अस्ति यत् **अपदो दूरगामी** अस्ति।

(ग) जानाति = मम पार्श्वे तस्य पुस्तकमस्ति किं स: **जानाति?**

(घ) प्रकाश: = चन्द्रमस: **प्रकाश:** शीतल: भवति।

(ङ) इच्छन् = सा बालिका पठन् **इच्छन्** अपि न पठिता।

(च) विभद्र: = घट: जलेन **विभद्र:** अस्ति।

4. निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलिए—

(क) ध्वजा: पर्वताग्रे विराजन्ते।

(ख) ये जान्ति ते पण्डित:।

(ग) आसनान्यवे सदा विश्रामदायका: भवन्ति।

(घ) हरय: एव चक्राणि धार्यन्ते।

5. निर्देशानुसार शब्द रूप लिखिए—

(क) शिक्षाभक्षिणा

(ख) फलेभ्य:

(ग) पर्वतात्

(घ) प्रकाशान्

6. निम्नलिखित पदों में संधि-विच्छेद कीजिए—

गुरुपदेश: = **गुरु: + उपदेश:**

परोपकार: = **पर + उपकार:**

भानूदय: = **भानु + उदय:**

फलाग्रे = **फल + अग्रे**

जलौघ: = **जल + औघ:**

7. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए—

प्रकाश: =

चन्द्रमा = **इन्दु: शशांक: सुधांशु:**

वृक्ष: = **तरू: विटप् शाखिन**

हरि: = **विष्णु: चक्रधारी नारायण:**

खग: = **पक्षी नभचर:**

मानव: = **नर: मनुष्य: पुरुष:**

भूमि: = **वसुधा पृथिवी धरा**

8. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए—

निर + जीव: = **निर्जीव:**

दन्तै: + हीन: = **दन्तर्हीन:**

तस्य + आदि: = **तस्यादि:**

चतु: + पाद: = **चतुष्पाद:**

संसारे + अस्मिन् = **संसारेऽस्मिन**

चक्षु: + न = **चक्षुर्न**

द्वाविंशतिः पाठः

पुनर्मूषको भव

हिंदी अनुवाद

आसीत् ..... भ्रमति स्म।

अनुवाद—प्राचीन काल में ब्रह्मपुर में कपिल नाम के एक मुनि थे। एक बार उन्होंने कुटी के द्वार पर कौए के मुख से गिरे एक चूहे का बच्चा देखा। तब उत्पन्न के कारण उन मुनि ने उसे नीवार के दानों से बड़ा किया।

एक बार उस चूहे को खाने के लिए पीछे दौड़ते हुए किसी बिडाल सर बिल्ली को देखा। तब तप के प्रभाव से उन मुनि ने चूहें को बलिष्ठ बिडाल बनाया। तत्पश्चात् कभी कुत्ते से डरा वह बिडाल भागकर मुनि के पास में गया। यह बिडाल कुत्ते से डरता है यह जानकर उन मुनि ने उसे कुत्ता बनाया। तब से वह कुत्ता इधर-उधर निर्भय होकर भ्रमण करता था।

अथैकदा ..... पुनर्मूषक चकार।

अनुवाद—इस प्रकार एक बार फिर कुत्ता शेर से डरकर मुनि के पास आ गया। कुत्ते को शेर से अधिक भय है ऐसा मानकर उन्होंने उसे शेर बनाया। परंतु शेर बनने पर भी वह मुनि से चूहे के समान ही देखता है। अत: वहाँ के सभी जन (लोग) शेर को देखकर बोलते इन मुनि ने चूहे को शेर

बनाया गयी है।' इस प्रकार सुनकर वह शेर व्यथित होकर सोचने लगा-जब तक यह मुनि जीवित है तब तक मेरे स्वरूप की अपकीर्ति होती रहेगी। इस प्रकार विचार करके वह मुनि को मारने के लिए उद्यत हो गया। मुनि ने उस कुबुद्धि के अभीष्ट मनोभावों को जानकर कमण्डलु से जल लेकर मन्त्रपाठ करके उसे शाप दिया-जिस पाप के कारण तुम मुझे मारने की इच्छा कर रहे हो, जाओ तुम होगे फिर से चूहे की योनि को प्राप्त होगे।

इस प्रकार शाप देकर मुनि ने उसे फिर चूहा बना दिया।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) काकमुखाद् मूषकशावक: मुने: उटजद्वारे च पतित:।

(ख) मुनिना मूषक: नीवारकणै: संवर्धित:।

(ग) कुक्कुराद् भीत: बिडाल: मुने: पार्श्वे अगच्छत्।

(घ) तत्रत्या: जना: सिंह दृष्टवा वदन्ति स्म यत् अनेनय मुनिना मूषकोऽयं सिंह: निर्मित:।

(ङ) कथायामन्ते मुनिस्तं शप्तवा पुनर्मूषक: चकार।

2. निम्नलिखित वाक्य पूरे कीजिए—

(क) उटजद्वारे **काकमुखाद्** पतित: **मूषकशावको** दृष्ट:।

(ख) मूषको बलिष्ठो **बिडाल:** कृत:।

(ग) अनेन मूषकोऽयं **सिंह:** निर्मित:।

(घ) स: मुनिम् एवं **हन्तुम्** उद्यतोऽभवत्।

(ङ) इत्थं शप्त्वा मुनिस्तं **पुनर्मूषक:** चकार।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) इन मुनि ने यह चूहा शेर बनाया।

(ख) तब से लेकर वह कुत्ता इधर-उधर निर्भय होकर भ्रमण करता था।

(ग) ऐसा सोचकर वह मुनि को ही मारने के लिए उद्यत हो गया है।

(घ) जिसके कारण तुम ऐसी अवस्था को प्राप्त मुझे मारना चाहते हो।

4. रंगीन पदों के आधार पर प्रश्नों का निर्माण कीजिए—

(क) ब्रह्मपुरे को: नाम्न: मुनि वसति स्म?

(ख) मुनिना क: बलिष्ठो बिडाल: कृत:?

(ग) के सिंहं दृष्ट्वा हसन्ति?

(घ) इत्थं शप्त्वा मुनि: कं मूषक: चकार।

(ङ) क: निर्भयं भ्रमति स्म?

5. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए—

तेन + एकदा = **तेनैकदा**

इति + अवगम्य = **इत्यवगम्य**

अथ + एकदा = **अथैकदा**

स्वरूपाख्यानम् = **स्वरूपाख्यानम्**

6. कोष्ठक में दिए गए अव्ययों का प्रयोग करके वाक्य पूरे कीजिए—

(क) गीतं **श्रुत्वा** बालका: गायन्ति।

(ख) स: मयूरं **दृष्ट्वा** गच्छति।

(ग) परीक्षापरिणामं **ज्ञात्वा** राधा प्रसन्ना अभवत्।

(घ) मम मित्रं सर्वदा **विचिन्त्य** कार्यं करोति।

(ङ) अहं फलं **खादितुम्** इच्छामि।

7. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए—

(क) मूषका: धावन्ति।

(ख) बिडालौ कुक्कुरात् भीतौ स्त:।

(ग) सिंहा: अचिन्तयन्।

(घ) अहं संस्कृतं पठामि।

(ङ) छात्रा: गृहे पठन्ति।

त्रयोविंशतिः पाठः

दूरदर्शनम्

हिंदी अनुवाद

वैज्ञानिक युगेऽस्मिन् ..... पश्यति।

अनुवाद—इस वैज्ञानिक युग में अनेक साधन उपलब्ध हैं। दूरदर्शन उन साधनों में एक आधुनिक साधन है। इसने आधुनिक जीवन को बहुत प्रभावित किया। मनोरंजन के साथ ही यह शिक्षा प्राप्ति का भी एक संतुष्टि कारक माध्यम है। मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति दूरस्थ स्थलों और पदार्थों के विषय में जानने के लिए अत्यधिक उत्सुक होती है। आकाशवाणी (रेडियो), फोटोग्राफी, छपाई आदि के माध्यम से वह देख नहीं, सकता परंतु दूरदर्शन के द्वारा वह चलचित्रों के सजीव की भाँति, पूरे विश्व में होने वाली गतिविधियों और घटनाओं के अपने कमरे में ही देखता हैं।

दूरदर्शनम् ..... पश्यामः च।

अनुवाद—'दूरदर्शन' दूर से देखना ऐसी संज्ञा से अभिहित होती हैं। इसका आविष्कार 1926 ई० में 26 जनवरी को अभियन्ता जॉन एल० बेयर्ड महोदय ने किया था। जिस

सिद्धांत से रेडियो कार्य करती है वैसे ही दूरदर्शन भी करता है। रेडियो को हम केवल सुन सकते हैं परंतु दूरदर्शन के द्वारा देख व सुन सकते हैं।

दूरदर्शनेन ..... शक्नोति।

अनुवाद—दूरदर्शन ने आधुनिक जीवन को बहुत अधिक प्रभावित है। विशेष रूप से भारत देश में जहाँ अधिकांश लोग अशिक्षित और समस्याओं से पीड़ित हैं। अत: यहाँ इसकी उपयोगिता वृद्धि को प्राप्त होती है। इससे साधारण लोगों को भी शिक्षित किया जा सकता है। सिंचाई कार्य कब और किस प्रकार से किया जाना चाहिए, कीटनाशकों का प्रयोग कब और कैसे किया जाना चाहिए, विभिन्न प्रकार के फल देने वाले पौधों का किस प्रकार से रोपण करना चाहिए, इस प्रकार का सभी ज्ञान दूरदर्शन पर प्रभावपूर्ण ढंग से वर्णित किया जा सकता है। उपग्रहों की सहायता से अब पूरी पृथ्वी के मौसम संबंधी चित्रों को दूरदर्शन पर देखते हैं। हमारे समाज में मद्यपान, बाल-विवाह, आदि कुरीतियाँ, अशिक्षा, जनसंख्या-वृद्धि इत्यादि अनेक समस्याएँ हैं, कुरीतियों के परिणामों को दिखाकर तथा स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान देकर साधारण जनों को दूरदर्शन के माध्यम से प्रभावपूर्ण ढंग से शिक्षित किया जा सकता है।

शिक्षाक्षेत्रेऽयं ..... करोति।

अनुवाद—शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी है। यह शिक्षा को सजीव-सरस और मनोरञ्जक करता है। दूरदर्शन एक आदर्श अध्यापक की तरह पढ़ाने के लिए हमारी कक्षा में प्रवेश करता है। दूरदर्शन में चुंबक का गुण है जो सरलता के साथ हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इससे प्रयोगात्मक विधि से पाठ को प्रस्तुत किया जाता है। अध्यापक इसमें अनेक प्रकार की शिक्षण सामग्री का प्रयोग करते हैं जो पाठ को मनोरञ्जक और व्यावहारिक बनाती है।

दूरदर्शने ..... कष्टप्रदमनु भवतीति।

अनुवाद—दूरदर्शन में देश-विदेशो में प्रचलित (चल रही) अनेक खेल प्रतियोगिताओं का आनन्द भी दर्शक सरलता से प्राप्त करते हैं। व्यायाम, गृहशास्त्र, हस्तकौशल, नृत्यक्रिया, गायन, समाचार, वाणिज्य (व्यापार) आदि सभी विषयों में अनेक रोचक सामग्री प्रस्तुत करता है। दूरदर्शन ज्ञान और मनोरंजन का सशक्त माध्यम है।

वर्तमान में मनुष्य को इसकी अनुपस्थिति कष्टप्रद अनुभव होती है।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

(क) दूरात् दर्शनम् इति दूरदर्शनम् अर्थम् अस्ति।

(ख) दूरदर्शनस्य आविष्कारम् एकोनविंशति तमे षडविंशमधिकं जनवरी मासस्य पञ्चविंशति दिनाँके अभियन्ता जॉन एल० बेयर्ड महोदयेन कृतम्।

(ग) दूरदर्शनेन आधुनिक जीवनम् अति प्रभावितं कृतम्।

(घ) आकाशवाण्या व्यं केवलं शृणुम: परं दूरदर्शनेन शृणुम: पश्याम: च।

(ङ) दूरदर्शनम् अध्ययने प्रयोगात्मक विधे: पाठं प्रस्तौति।

(च) दूरदर्शनं व्यायाम: ग्रहशास्त्र:, हस्तकौशल: नृत्याक्रियादिविषयाणां कार्यक्रमाणि प्रस्तौति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) मानवस्य **जिज्ञासु-प्रवृत्ति:** दूरस्थलं पदार्थञ्च जिज्ञासार्थम् अधीरोत्सुको च भवतीति।

(ख) दूरदर्शनयन्त्रं येन सिद्धान्तेन **आकाशवाणी** कार्यं करोति तथैव इदमपि कार्यं करोति।

(ग) **आकाशवाण्या** वयं केवलं शृणुम: परं **दूरदर्शनेन** शृणुम: पश्याम: च।

(घ) शिक्षाक्षेत्रेऽयं **बहूपयोगि** वर्तते।

(ङ) वर्तमाने मानव: तस्य **अनुपस्थितिं** कष्टप्रदमनुभवतीति।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) वैज्ञानिक युगेऽस्मिन् अनेकानि साधनानि समुपलब्धानि सन्ति।

(ख) दूरदर्शनेन: आधुनिक जीवनं बहु प्रभावितं कृतम्।

(ग) अस्य आविष्कारं वैज्ञानिक: जॉन एल० बेयर्ड महोदयेन कृतम्।

(घ) दूरदर्शनस्य माध्यमेन अशिक्षितान् जनान् शिक्षिता: कर्तुं शक्नुम:।

(ङ) इरात् दर्शनम् इति दूरदर्शनं नाम कथ्यते।

4. हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) दूरदर्शन उन साधनों में आधुनिकतम् साधन है।

(ख) इसके माध्यम से अनपढ़लोगों को भी शिक्षित किया जा सकता है।

(ग) मनोरंजन के साथ यह शिक्षाप्राप्त करने का भी एक संतुष्टकारी माध्यम है।

(घ) वर्तमान में मनुष्य इसकी अनुपस्थिति को कष्टकारी महारण करती है।

(ङ) दूरदर्शन ज्ञान और मनोरंजन में सशक्त माध्यम है।

5. निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलिए—

(क) शिक्षा-क्षेत्रेषु एतानि बहूपयोगी वर्तन्ते।

(ख) अयं मनोरंजनैः सह शिक्षाप्राप्ते डरति एकं सन्तुष्टकरं माध्यमं अस्ति।

(ग) एतत् सर्वं ज्ञानां एतैः वर्णितं शक्नुवन्ति।

(घ) दूरदर्शनानि ज्ञाने मनोरंजनेच सशुक्तानि माध्यमानि वर्ततन्ते।

6. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए—

(क) विद्युततरंगान् = बिजली की लहरों को (तरंग)
दूरदर्शनं: विद्युततरंगान् गृह्णति।

(ख) वृद्धिमाप्नोति = उन्नति प्राप्त करता है।
दूरदर्शनस्योपयोगिता वृद्धिमाप्नोति।

(ग) आरोपणीयम् = लगाने चाहिए।
विभिन्नान् फलीभूत पादपान् विविध प्रकारेण आरोपणीयम्।

(घ) शृणुमः = सुनते है
आकाशवाण्या वयं केवलं शृणुमः परं दूरदर्शनेन शृणुमः पश्यामः च।

(ङ) परिवर्तनमेकम = एक बदलाव
दूरदर्शनम् आधुनिके युगे- महत्त्वपूर्ण परिर्वन मेके विद्यते।

7. निर्देशानुसार शब्द-रूप लिखिए—

(क) मासः—प्रथमा विभक्ति एकवचन **मासः**

(ख) दूरदर्शनम्— षष्ठी विभक्ति बहुवचन **दूरदर्शनानाम्**

(ग) अध्यापकः—तृतीया विभक्ति एकवचन **अध्यापकेन**

(घ) जीवनम्—द्वितीया विभक्ति एकवचन **जीवनम्**

8. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

कोऽपि = **कः + अपि**

हरेऽव = **हरे + अव**

उच्चारणम् = **उत् + आचरणम्**

दुग्धम् = **दुक् + धम्**

तत्परः = **तत् + परः**

9. उचित मिलान कीजिए—

समुपलब्धानि	→	**उपलब्ध**
कृतम्	→	**किया**
टंकणः	→	**छपाई**
अभियन्ता	→	**इंजीनियर**
क्रीडास्पर्धा	→	**खेल का मैच**
उन्मुखाः	→	**मुँह बाए**

10. दूरदर्शन पर लघु निबंध लिखिए—

वैज्ञानिक युगेऽस्मिन् अनेकानि साधनानि समुपलब्धानि सन्ति। दूरदर्शनं तेषु साधनेषु एकम् आधुनिकतमं साधनमस्ति। अनेन आधुनिक जीवनं बहुत प्रभावितं कृतम्। मनोरंजने न सह अयं शिक्षा प्राप्तेरपि एकं संतुष्टकरं साधनम् अस्ति। दूरदर्शनम् इरात् दर्शनम् इति संज्ञा विद्यते। अस्य आविष्कारम् एकोनविंशति तमे षडविंशमधिकं जवनरी मासस्य पञ्चविंशति दिनाङ्के अभियन्ता जॉन एल० बेयर्ड महोदयने कृतम्। दूरदर्शनेन आधुनिक जीवनं बहुप्रभावितं कृतम्। विशेषतः भारतदेशे, यत्र अधिकांशतः जनाः अशिक्षिताः समस्योन्मुखाः च सन्ति। अतः अत्र अस्योपयोगिता वृद्धिमाप्नोति। अनेन जन-साधारणं शिक्षितुकर्तुं शक्नोति। वर्तमाने मानवः तस्य अनुपस्थिति कष्टप्रदमनुभवतीति।

चतुर्विंशतिः पाठः

दयालुः नरः

हिंदी अनुवाद

एकः आखेटकः ..... अकरोत्।

अनुवाद—एक शिकारी ने गाँव से बाहर वन में आकर बाण से एक कबूतर को मारा। जब धनुष से निकले बाण ने कबूतर को भेद दिया तभी वह कबूतर पेड़ से पृथिवी पर गिर गया। एक दयालु ने उसे देखा। उसने उसे उठाने का प्रयत्न किया। कबूतर उस व्यक्ति (नर) से डर गया। उसने उसके हाथ से उसने का प्रयत्न परंतु किया कुछ ही क्षणों में वह आश्वस्त हो गया कियह दयालु है। उस आदमी ने उसके शरीर से बाण को बाहर कर और नदी के तट पर जाकर जल लेकर उसके रक्त को धोया और चिकित्सा की।

अल्पसमयैव ..... कृतवान्।

अनुवाद—थोड़े ही समय में कबूतर की चेतना लौट आई। लौटते समय वह नर (मनुष्य) उसे अपने घर लेकर आ

गया। उसने कबूतर को पिंजरे में बैठा दिया रख दिया। उसके पाँच दिन बाद वह कबूतर पूर्णत: स्वस्थ हो गया। तब आपसी ने पिंजरे से बाहर कर कबूतर को स्वतंत्र कर दिया। कतार्थ होकर उस कबूतर ने उसका धन्यवाद किया।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) आखेटकेन कपोत: विद्ध:।
(ख) यदा बाणेन कपोत: बिद्ध: तदैव स: वृक्षात् भूमौ अपतत्।
(ग) कपोत: नरात् भीत:।
(घ) नद्या: तटे गत्वा नर: जलं नीत्वा तस्य रुधिरं प्रक्षालयत् चिकित्सां च अकरोत्।
(ङ) कपोतस्य चेतना प्रत्यागता।
(च) प्रत्यागमन समये नर: कपोतं नीत्वा स्वगृहम् आगत:।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) आखेटक: ग्रामात् बहि: वने आगत्य बाणेन **कपोतमेकम्** अहनत्।
(ख) स: तम् उत्थातुं **प्रयत्नम्** अकरोत्।
(ग) तेन नरेन तस्य **शरीरात्** बाणं बहि: कृत:।
(घ) स: कपोतं **पिञ्जरे** अस्थापयत्।
(ङ) कृतार्थो भूत्वा स: कपोत: तस्य **धन्यवादं** कृतवान्।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) आखेटक: बाणेन कपोतम् अहनत्।
(ख) कपोत: वृक्षात् अपतत्।
(ग) कपोतस्य चेतना प्रत्यागता।
(घ) कपोतस्य शरीरात् रुधिरं प्रवहति स्म।
(ङ) कपोत: दयालु नरस्य धन्यवादम् अकरोत्।

4. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए—

(क) कपोत:— कपोत: तस्मात् नरात् भीत:।
(ख) अहनत् आखेटक:— बाणेन कपोतम् अहनत्।
(ग) पिञ्जरात् शुक:— पिञ्जरात् उड्डित:।
(घ) अपतत् कपोत:— वृक्षात् अपतत्।
(ङ) उत्पतति कपोत:— भूमौ उत्पतति।
(च) भूत्वा कृतार्थो भूत्वा स:— कपोत: तस्य धन्यवादं कृतवान्।
(छ) उत्थतुम् स: तम् उत्थातु प्रयत्नम् अकरोत्।

5. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) कबूतर उस नर (आदमी) से डर रहा था।
(ख) कबूतर के शरीर से खून बह रहा था।
(ग) तोता पेड़ से पृथिवी पर गिरा।
(घ) कबूतर पेड़ पर निवास करता है।
(ङ) तोता पिंजड़े से उड़ गया।
(च) आकाश से फूलों की बारिश हुई।
(छ) तुम सब अपना घर का काम कब करोगे।

पञ्चविंशतिः पाठः

सुखकरः श्रमविभागः

हिंदी अनुवाद

रमा—सखि विभे! ..... त्वद्वितीया एव।

अनुवाद—

रमा : अरी सखी विभा! कल सुबह में मुझे बहुत कार्य करना है। वह कैसे किया जाए। चिंता से मेरा मन व्याकुल है।

विभा : इसमें चिंता की क्या बात? मैं वहाँ तुम्हारी सहायता करूँगी वर्षा को भी वैसा करने के लिए सलाह दूँगी। इस प्रकार हम दोनों की सहायता से कार्य पूर्ण हो जाएगा।

रमा : क्या वर्षा वह करने के लिए तैयार हो सकती है। तक उससे ही पूछती हूँ, ''अरी वर्षा! प्रात:काल में बहुत कार्य करने है क्या तुम हमारी कुछ सहायता करोगी।

वर्षा : इससे मुझे क्या लाभ होगा? उसे करने के लिए मैं उत्साहित नहीं हूँ। फिर मुझेभी सुबह का कार्य ही है। उसे कौन करेगा?

विभा : सखी वर्षा! तुम रमा का अपमान कैसे कर सकती हो? दूसरों की सहायता करना मनुष्य का धर्म है। इस प्रकार की सहायता करके तुम्हें क्या हानि होती है। और तुम्हारे घर में कार्य भी कम है। उसके बाद में भी अकेले किया जा सकता है। वहाँ भी यदि दूसरे की जरूरत है तो मैं सहायता करूँगी।

वर्षा : तुमको कष्ट नहीं देती हूँ। मैं अकेली ही जल्दी-जल्दी समाप्त करके विश्राम का सुख क्यों नहीं अनुभव करूँ?

विभा : विश्राम का मजा आराम से लीजिए। ऐसा करने में के परंतु मैं तुमसे यही पूछती हूँ कि तुम्हारे गृहकार्य तुम अकेली जल्दी-जल्दी करोगी क्या?

वर्षा : नि:संदेह अकेले ही।

विभा स्वावलम्बम् ..... परमादरेण।

अनुवाद—

विभा : स्वालम्बन को ही मैं बहुत मानती हूँ। दूसरों की सहायता नहीं अपने बल पर अपने वश से बाहर मैं सभी कार्य करती हूँ।

रमा : अरी वर्षा! स्वावलम्बन मेरा भी मत है। परंतु अपने वशं से बाहर होने पर कार्य में दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है अकेला पुरुष सभी कार्यों को नहीं साध सकता है। कोई भी गृह, वस्त्र आदि स्वयं अकेले ही निर्मित नहीं कर सकता है और उसके लिए शिल्पी संघ का निर्माण होता है। अत: विपत्ति में परस्पर श्रम का विभाजन करके एक-एक विषय की लेकर सभी कार्य करने चाहिए। और इस प्रकार की निपुणता से लोक में भी प्रशंसा मिलती है। इस प्रकार श्रम का विभाजन करने से संसार की यात्रा सुखकारी होती है।

विभा : विचार करो दूसरे राष्ट्रों के उद्योग पद्धति, फल प्राप्त होने तक काम करने वाले उद्यमशील यूरोपीयन अपने अद्‌भुत कार्यों से संसार को आश्चर्यचकित करते हैं। अच्छी तरह से सजाई और उत्पन्न वस्तु उनके श्रमविभाग का ही मूल है।

रमा : हाथ के नीचे देखना कितनी दूर है? हमारी गृह व्यवस्था को ही सूक्ष्मदृष्टि से देखो। गृहस्वामी सभी कार्यों का मूल धन अर्जित करता है और उससे धान्यादि वस्तुओं को खरीदकर गृहिणी को देता है और वह अच्छी तरह से व्यवस्था करके और पाकादि क्रिया निष्पादित करके पूरे परिवार को सुख देती है। तो इस प्रकार जीवन में किया गया श्रम विभाग ही सुखकारी है और दूसरा नहीं।

वर्षा : जल्दी से श्रम विभाग करके आज्ञा दो। तुमने अच्छे से स्पष्ट करके हृदय में सम्यक रूप से प्रविष्ट कर दिया। अब मैं तुम दोनों के वचनों को सिर पर धारण करती हूँ।

जहाँ तक हो सकता है वहाँ तक अर्थ साधने में अर्थात् कार्य करने में पूरा प्रत्यन करूँगी।

रमा : मैं तुम दोनों के स्नेह से तुम्हारा आदर करती हूँ।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—

(क) रमा नाम्नी कार्य: चिन्ता अस्ति यद् श्व: प्रभाते तया बहु कार्यं करणीयम् अस्ति। तत् कथं निर्यतिष्यति।

(ख) तत: को मे लाभ:? तन्न कर्तुमुत्सहे। पुनमहमपि प्रभातिकम् अस्त्येव। तत् का करिष्यति?

(ग) आत्मबलातिगे कार्ये परसहाय्य प्रार्थनम् आवश्यकं भवति न हि एक पुरुषसाध्या: सकला: क्रिया: कर्तुं शक्यते।

(घ) सुसंस्कृतं सुजातं च वस्तुज्ञातं निर्मिततां उद्योग शीला: यूरोपीयानां: श्रमविभाग: एव मूल्यम्।

(ङ) जीवनक्रम: श्रमविभागेन सुखकर: भवति।

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) तव गृहकृत्यं च अल्पम्। तत् पश्चाद् अपि **एकाकिन्या** सुकरम्।

(ख) अहम् एव एकाकिनी **तल्लघुलघुसमाप्य** विश्रान्ति सुखं कथं न अनुभवेयम्।

(ग) आत्मबलातिगे कार्ये परसहाय्यप्रार्थनम् **आवश्यकं** भवति नहि एकपुरुषसाध्या: सकला: क्रिया:।

(घ) **परिचिन्त्यतां परराष्ट्राणाम् उद्योगपद्धति: आफलोदयकर्मणि** उद्यमशीला: यूरोपीया: निजादभुततकृत्ये: विस्मापयन्ति।

(ङ) विभक्त: खलु **श्रमोऽतीव** सुसहो भूत्वा महते फलोदयाय कल्पते।

3. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(क) एक दूसरे की सहायता करना मनुष्य धर्म है।

(ख) मैं अकेली ही वह छोटा-छोटा समास करके आराम का मजा कैसे अनुभद न करूँ।

(ग) अपने वश से बाहर होने पर कार्य में दूसरे की आवश्यकता होती है अकेला व्यक्ति सभी कार्य पूर्ण नहीं कर सकता।

(घ) अच्छी तरह से सजाई और उत्पन्नवस्तु उनके श्रमविभाग का ही मूल है।

(ङ) अब तुम दोनों के वचनोंको फिर पर धारण करती हूँ।

4. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) भवत: स्वभावेन मम स्नेह: अस्ति।
(ख) किं त्वं मम कार्ये सहायक भवति।
(ग) एकाकी पुरूष: सर्वाणिकार्याणि पूर्णानिन कर्तुं शक्यते।
(घ) अद्य मां कार्यालये बहु कार्यम् अस्ति।
(ङ) असंशयं स्वद्वितीया एव।

5. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए और इनके अर्थ लिखिए—

(क) लघुतरम् = बहुत छोटा
एतत् क्रीडन कं सर्वेभ्य: लघुतरम् अस्ति।
(ख) एकपुरुषसाध्या: = एक व्यक्ति के द्वारा साधी गई
परं आत्मबलातिगे कार्ये परसाहाय्यप्रार्थनम् आवश्यकं भवति नहि एक पुरुषसाध्या: सकला: क्रिया:।
(ग) निर्वर्तयामि = पूरा करती हूँ
आत्मबलेन एव सर्वा: क्रिया: निर्वर्तयामि।
(घ) सकलारम्भमूलम् = सभी प्रारम्भों का मूल
गृहपति: सकलारम्भमूलं धनम् अर्जयति।
(ङ) सम्यक = अच्छा
युवाभ्यां विवृतं च तत् सम्यक प्रविष्टं मे हृदयम्।
(च) श्रमविभागेन = कार्यों के विभक्त करने से
एवं श्रमविभागेन संसार यात्रा सुखकारी भवति।
(छ) अस्माकम् = हमारे
अस्माकं गृहव्यवस्था एव सूक्ष्म दृष्ट्या विलोक्यताम्।

6. निम्नलिखित शब्दरूपों के लिंग, विभक्ति एवं वचन लिखिए—

शब्दरूप:	**लिङ्ग:**	**विभक्ति:**	**वचनम्**
अस्माकम्	**पुल्लिङ्ग:**	**षष्ठी**	**बहुवचनम्**
प्रभाते	**पुल्लिङ्ग:**	**सप्तमी**	**एकवचनम्**
युवाभ्याम्	**पुल्लिङ्ग:**	**चतुर्थी**	**द्विवचनम्**
श्रमान्	**पुल्लिगङ्ग:**	**द्वितीया**	**बहुवचनम्**
युवयो:	**पुल्लिङ्ग:**	**सप्तमी**	**द्विवचनम्**
साहाय्यम्	**पुल्लिङ्ग:**	**द्वितीया**	**एकवचनम्**

7. निम्नलिखित वाक्यों के क्रियापदों को सही कीजिए—

(क) अहं तत्र साहाय्यं करिष्यामि।
(ख) कोऽपि गृहवस्त्रादिकं स्वमेको निर्मातुं न प्रभवेत्।
(ग) अहं प्रीतोऽस्मि युवयो: परमादरेण।
(घ) युवां किंचिदल्प साहाय्यं करिष्यथ:।
(ङ) अधुना अहं शिरसा धारयामि: युवयो: वच:।

8. निम्नलिखित अविकारी शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) सम्यक = युवाभ्यां विवृतं च तत् सम्यक प्रविष्टं मे हृदयम्।
(ख) तव = तव गृहकृत्यं च अल्पम्।
(ग) तत: = तत: को मे लाभ:।
(घ) अत्र = काऽत्र चिन्ता?
(ङ) एव = असंशयं त्व द्वितीया एव।
(च) अधुना = अधुना शिरसा धारयामि युवयो: वच:।